



सरकारी गजट, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित

खण्ड 78] प्रयागराज, शनिवार, 12 अक्टूबर, 2024 ई० (आश्विन 20, 1946 शक संवत्) [संख्या 41

विषय-सूची

हर भाग के पन्ने अलग-अलग किये गये हैं, जिससे इनके अलग-अलग खण्ड बन सके।

विषय	पृष्ठ संख्या	वार्षिक चन्दा	विषय	पृष्ठ संख्या	वार्षिक चन्दा
सम्पूर्ण गजट का मूल्य		रु०			रु०
भाग 1—विज्ञप्ति—अवकाश, नियुक्ति, स्थान—नियुक्ति, स्थानान्तरण, अधिकार और दूसरे वैयक्तिक नोटिस	787-790	3075	भाग 4—निदेशक, शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश	..	975
भाग 1-क—नियम, कार्य-विधियाँ, आज्ञायें, विज्ञप्तियाँ इत्यादि, जिनको उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महोदय, विभिन्न विभागों के अध्यक्ष तथा राजस्व परिषद् ने जारी किया	791-794	1500	भाग 5—एकाउन्टेन्ट जनरल, उत्तर प्रदेश	..	975
भाग 1-ख (1) औद्योगिक न्यायाधिकरणों के अभिनिर्णय			भाग 6-(क) बिल, जो भारतीय संसद में प्रस्तुत किये गये या प्रस्तुत किये जाने से पहले प्रकाशित किये गये	975	
भाग 1-ख (2)—श्रम न्यायालयों के अभिनिर्णय			(ख) सिलेक्ट कमेटियों की रिपोर्ट		
भाग 2—आज्ञायें, विज्ञप्तियाँ, नियम और नियम विधान, जिनको केन्द्रीय सरकार और अन्य राज्यों की सरकारों ने जारी किया, हाई कोर्ट की विज्ञप्तियाँ, भारत सरकार के गजट और दूसरे राज्यों के गजटों का उद्धरण	..	975	भाग 6-क—भारतीय संसद के ऐक्ट		
भाग 3—स्वायत्त शासन विभाग का क्रोडपत्र, खण्ड क—नगरपालिका परिषद्, खण्ड ख—नगर पंचायत, खण्ड ग—निर्वाचन (स्थानीय निकाय) तथा खण्ड घ—जिला पंचायत	..		भाग 7-(क) बिल, जो राज्य की धारा समाओं में प्रस्तुत किये जाने के पहले प्रकाशित किये गये		
			(ख) सिलेक्ट कमेटियों की रिपोर्ट		
			भाग 7-क—उत्तर प्रदेशीय धारा समाओं के ऐक्ट		
			भाग 7-ख—इलेक्शन कमीशन ऑफ इंडिया की अनुविहित तथा अन्य निर्वाचन सम्बन्धी विज्ञप्तियाँ	183-206	
			भाग 8—सरकारी कागज-पत्र, दबाई हुई रुई की गाठों का विवरण-पत्र, जन्म-मरण के आँकड़े, रोगग्रस्त होने वालों और मरने वालों के आँकड़े, फसल और ऋतु सम्बन्धी रिपोर्ट, बाजार भाव, सूचना, विज्ञापन इत्यादि	1003-1034	975
			स्टोर्स—पर्चेज विभाग का क्रोड पत्र	..	1425

भाग १

विज्ञप्ति-अवकाश, नियुक्ति, स्थान-नियुक्ति, स्थानान्तरण, अधिकार और दूसरे वैयक्तिक नोटिस।

राजस्व विभाग

अनुभाग-14

अधिसूचना

25 अप्रैल, 2022 ई०

सं० 227 /एक-14 /2022—उत्तर प्रदेश राजस्व संहिता, 2006 (उत्तर प्रदेश अधिनियम संख्या-8 सन् 2012) की धारा 43 की उपधारा (2) के अधीन शक्तियों का प्रयोग करके राज्यपाल घोषणा करती हैं कि नीचे अनुसूची में विनिर्दिष्ट जिला संतकबीर नगर के 337 ग्राम, ग्रामीण आबादी के क्षेत्रों के सर्वेक्षण एवं अभिलेख क्रियाओं के प्रयोजनार्थ, इस अधिसूचना के गजट में प्रकाशित किये जाने के दिनांक से, भारत सरकार की स्वामित्व योजना के अधीन रखे जायेंगे।

अनुसूची

जिला	तहसील	ग्राम
1	2	3
संतकबीर नगर	मेहदावल	पौनी, खजुरकोल, खजुरी, मङ्गरिया मलैया, बेलराई, बरगदवा माफी, केचुआ खोर, भीर खास, जखिनिया, सेवहा बाबू, मदरहना, सिंगंहाताल, करहना, कचरा वारी, अमरहा, फेउसा, परसा शुक्ल, प्रतापपुर, पुरैना, जोगीवीर, पसनारा, अकोल्ही, निघुरी, परसिया, बनोंली, मेहदावल, पनवारा, कोईल भार, मुडिला कला, अमथरी, बेलवा मिश्र, वरियौना, वहेरामाफी, कन्हरापार, सीहाझुड़ी, पवरिया, औरहिया मङ्गरिया, भरवलिया खुर्द, बेलवासेंगर, बभनी, बैरिहवा कला, अमरडोभा, देवरिया, बेलवा ठकुराई, जंगल वेलहर, देवरिया, बसहिया, गजहड़ा, डुहवा, पोखर मिटवा, बरडाड़, गातूखोर, गूनाखोर, शिटवा, डइमरिया, रतनापार, सोनौरा गुमान, मौनाडाड़, देवपुर, हासूजोत, कुसम्हां, नावध, शेखापुर, टड़वा, आराजी नौदरी, अमरडोभा, खजुरा खुर्द, नचनी, गुदरिहवा, खजुरा कला, नगराकला, इमिलीडीहा, चौनपुर, औरही, टेड़वा, डाबर, जमुअरियाखुर्द, सड़हरी, जमुअरिया कलां, रकक्सा, चामट, जोरवा, इन्दरपुर, कुसौना कलौं, हरपुर, परसौना, नगरा खुर्द, कोटिया, राजावारी, कटेला, अमहा, अहिरौली, सई लगड़ी, चिडिरिहवा, धनेज, थरौली, बेलौली, चिकनियाडीह, कोलकी चमरसन, देवलसा, बभनी, कौडिया, सिधौना, मैनहवा, बौडिहार, डिडिया खुर्द।
"	खलीलाबाद	देवरिया नासिर, परसोहिया, डडवामाली, मिश्रौलिया, मन्जारी, भंगूरा अहिरानी, लौकी लाला, मदार पुर, घुसुरा, कथक पुरवा, दरियाबाद, जातेडीहा दुबौलिया, छगुरिया बगुलि, छपिया आनन्दराय, टेकन्सी टेकन्सा, मदना, अहिरौली, ककरहिया, सुकरौली, पचतौरवा, पिपरा हसनपुर, भरवलिया पांडे, परसामीर, जुझारपुर, भरवलिया चक, भरवलिया बूधन, कड़जा, बढ़या माफी, पचदेउरी, हुजरा सोहावा, परसादपुर, पिपरा चक, छपियामाफी, पिडवा, देवरिया विजई, हड्हा, सैथवक्रिया सुठे, छपिया वसई, भरवलिया मेहर, वासिन, उचहरा खुर्द, साफियाबाद, ललौवा, रजगनपुर, सिंगार पुर, अशरफपुर, भेलवासी, बड़ेला, पिपरा कला, कांटडिहेश, बाँसगाँव, इनायत पुर, चाई खुर्द, छरांछ, मदारीजोत, खुटवा, मलिकजोत, डिहुलिया, समदहा, नाजिरजोत, बरईपार, मेढ़ी खुर्द, सन्तोष पुर, महला, छपिया अब्बल, गेहूडीला, घोडीसॉड, पिहुलाखोर, पचमां, शिववखरी, तेन्दुडाड़, परजूडीह, चन्दनी, बाघाकोल, माधो पुर, बन्धवा, बेलवा, सूपा, जामडीह, ठोठिया, वधवा, छाछापार, गुलरिहा, अतरौरा, कविता, परसा झाकरिया, अमिलहवा, सोहरा माफी, हैदरपुर, भिटिया, अमावा, उसका खुर्द, दुबौली, कुष्फर उर्फ उरद, मसजिदिया, नौहट, चमरहू, मोहम्मदपुर कठार, लक्ष्मीपुरउठ० निचौरा, मङ्गरिया गुलामराय, बुढ़सूअर उर्फ, बिसरापार, धमरजा, जिगिना, किर्डिहिरिया, भिउरा, धरमैनी, नैनाझाला, वरडाड।

1

2

3

संतकबीर नगर	घनघटा	रामपुर, पिकौरा, देवरिया उर्फ बंजरिया, अगया उर्फ सिदाही, अन्हराखादर (गैराबाद), भरवलिया, भिटनीकला, वसुधा, ठाठर, खरवनिया खुर्द, खीरीडाड, मगहरी पुर, परसा उर्फ फिराईपुर, मुरादपुर, वलही, श्रीनगर, बेलवा, भगवानपुर, देवकली कला, मरवटिया, कोड़रा भुआल पटठी, जमुनीखुर्द, देवापार, चकमहुआ उर्फ मोलनापुर, कड़सर, डुमरिया, अमृत महुआ, वनकटिया, ओझापट्टी, अन्हरा पट्टी, कुरुसुरी, चाननपार, अमेदवा, चिकनी, मुखलिसपुर, बनियाभार, गोपालपुर, शेरपुर, घोलवा, चौरा खुर्द, किरहवा, रीठी जोत, सनिचरा पांडे, सनिचरा चौबे, पल्दह जोत रुकिमना, गाजाधरपुर, रैनियाजोत, देवरिया उर्फ इटहिया, दौलतपुर, भिश्रौलिया, दीपपुर, लौकिहा, बगही, शिववर्खरी एहतम, अमौली, पौली, पचरा, घोरहट, मंझरिया, कल्यान पट्टी, बजरहा, उमरिया, खरगपुर, अजाँव, पुरेसुखलाल, दुधरा ऊर्फ चकिया, माझा खरगपुर, शिवरामपुर, चपरापुर्णी, दूलमपुर, डिहवा, भिटहा उर्फ कटहा, वघौड़ा, शनिचरा, मझौरा, पड़री, छितौनी, माधोपुर, करन पुर, गागरगाढ़, महथी, नन्हिया जोत, नावन जोत, चकसाठ, हरेवा, दौलतपुर, छपरा मर्वी, रामजगला, कुसियारी, बेलौरी, गोपालपुर, सोनाडी, मलौली, परसा खुर्द, भाटपार, छपिया, रुस्तम पुर, सेहरी, पारासीर, शाहपट्टी, दुधरा उर्फ खैरा, गनेशपुर, दुधरा खुर्द, जमालपुर, भिखारीपुर, भौवापार, गुनवतिया, सरैया, सियारामअधीनसिंह, धमचिया, नगहरा, कोड़रा, चोरमरा, जखौती, बेलमा, तामा, कुशफरा, गायघाट, भगता, बराँव, विशुनपुर, नकहा।
----------------	-------	---

आज्ञा से,
मनोज कुमार सिंह,
अपर मुख्य सचिव।

REVENUE DEPARTMENT

Section -14

In pursuance of the provisions of clause (3) of Article-348 of the Constitution, the Governor is pleased to order the publication of the following English translation of **Notification No. 227/1-14/2022**, dated April, 25, 2022.

NOTIFICATION

April 25, 2022

No. 227/1-14/2022—In exercise of the powers under sub-section (2) of section 43 of the Uttar Pradesh Revenue Code, 2006 (U.P. Act no. 8 of 2012), the Governor is pleased to declare that the 337 Villages of District Santkabir Nagar specified in the Schedule below shall be placed under Svamitva Yojna of Government of India for the purpose of Survey and Record Operation of the Village Abadi areas with effect from the date of publication of this notification in the Gazette.

SCHEDULE

District	Tehsil	Village
1	2	3
Santkabir Nagar	Menhdawal	Pauni, Khajurkola, Khazuri, Manjharia Malaiya, Belrai, Bagadawa Mafi, Kechuakhor, Bhir Khas, Jakhania, Sewha Babu, Madrahna, Singaha, Karhana, Kachara Bari, Amarha, Phewsa, Parasa Sukul, Paratappur, Puraina, Jogibir, Pasnara, Akolhia, Nighuri, Parasia, Banauli, Mahdewal, Panwara, Koil Bhar, Mudila Kala, Amathari, Belawa Misra, Bariauna, bahera mafi, Kandharapar, Sidharajhuri, Pawaria, Avarhiaman Jharia, Bharvalia Khurdh, Belwasengar, Babhani, Bariha Vakala, Amar Dobha, Devaria, Belwa Thakurai, Jangal Belhar, Deoria, Basdiha, Gajahara, Duhva, Pokhar Bhitva, Bardan, Gatukhor, Gunakhor, Bhitwa, Dumaria, Ratnapar, Sunaura Guman Rai, Maina Dand, Dewpur, Hansoojot, Kusmha, Nawachh, Sheikhapur, Tarwa, Arazi Newdari, Amar Dobha, Khajura Khurd, Nachani, Godrihwa, Khajura Kala, Nagra Kala,

1

2

3

Santkabir Nagar	Menhdawal	Imildeeha, Chainpur, Aurahi, Terua, Daber, Jamuaria Khurd, Sarhari, Jamuaria Kalan, Raksha, Chamar, Jorwa, Inderpur, Kusauna Kalan, Harpur, Parsauna, Nagra Khurd, Kotia, Rajabari, Katela, Amha, Ahirauli, Sai Lagadi, Chirihwa, Dhanej, Dharauli, Belauli, Chikaniadeh, Kolki Chamarsan, Devalasa, Babhni, Kauria, Sidhauna, Mainahwa, Baurihar, Dadiya khurd,
Do.	Khalilabad	Deoria Nasir, Parsohia, Dadwamali, Misraulia, Mnajhari, Bhagur Hirani, Lauki Lala, Madarpur, Ghusura, Kathak Purwa, Dariabad, Jatedeeha Dubaulia, Chaguria Baguria, Chapia Anand Rai, Tekensi Tekensa, Madana, Ahirauli, Kakrahia, Sukarauli, Pachtorwa, Pipra Hasanpur, Bharwalia Pandey, Parsameer, Jujharpur, Bharwalia Chak, Bharwalia Budhan, Karza, Barhya Mafi, Pachdeora, Hujur Suhawa, Parsadpur, Pipra Chak, Chhapia Mafi, Pidwa, Deoria Bijaie, Harha, Saithwalia Sutehra, Chhapia Basie, Bharwalia Mohar Ali, Wasin, Uchhara Khurd, Safiabad, Lalaua, Rajaganpur, Singarpur, Asharafpur, Bhelwasi, Barela Pipra Kalan Kaththes, Basgaon, Inayatpur, Chaie Khurd, Chharachh, Madarijot, Khutwa, Malikjot, Dihulia, Samadaha, Nazirjot, Baraipar, Medhi Khurd, Santospur, Mahla, Chapia Auwal, Gehudeela, Ghorisarh, Pihula Khor, Pachama, Shew Bakhari, Tenudand, Parjudeeh, Chanani, Baghakol, Madhaupur, Bandhawa, Belva, Soopa, Jamdih, Thodhiya, Badhawa, Chhachhapar, Gularihiya, Atraura, Kavita, Parsa Jhakaria, Emilihwa, Sughera Mafi, Haidarpur, Bhitiya, Amawa, Uska Khurd, Dubauli, Kusfer <i>urf</i> Urdahwa, Maszidia, Nauhat, Chamarhu, Mohammadpur Kathar, Laximipur Nichaura, Manjharia Gulamrai, Sheo Shankarpur <i>urf</i> Budhsuar, Bisrapar, Dhamaraja, Jigina, Kirkiriya, Bhiura, Dharmaini, Naina Jhala, Bardand,
Do.	Dhanghata	Rampur, Pikauna, Deoria <i>urf</i> Itahia, Agya <i>urf</i> Sidhahi, Anhara Khadar, Bharwalia, Bhin Khoini Kala, Basudha, Thathar, Kharwania Khurd, Khiri Dand, Magaharipur, Parsa <i>urf</i> Fidaio, Muradpur, Belahi, Shree Nagar, Belwa, Bhagwanpur, Deokali Kala, Marwatia, Kodara Bhual Patti, Jamuni Khurd, Devapar, Chak Mahuwa <i>urf</i> Molnapur, Kadsar, Dumaria, Amrit Mahuwa, Bankatia, Ojha Patti, Andhra Patti, Kursuri, Channapar, Amedwa, Chikani, Mukhuspur, Baniadhar, Gopalpur, Sherpur, Gholwa, Chaura Khurd, Khrhwia, Reethijot, Sanichara Pandey, Sanichara Chaubey, Paldahajot Rukmena, Gajadhpur, Rainiajot, Deoria <i>urf</i> Banjaria, Daulatpur, Misraulia, Deepur, Loukiha, Baghi, Seo Bakhri Ehtmal, Amauli, Pauli, Pachra, Ghorhat, Manjharia, Kalyan Patti, Bazaraha, Umaria, Kharagpur, Ajaw Khas, Purey Sukhlal, Dudhara <i>urf</i> Chakia, Majha Kharagpur, Shew Rampur, Chaparapuri, Doolampur, Dihwa, Bhitha <i>urf</i> Katha, Baghaura, Shanichara, Majhaura, Padari, Chhitauni, Madhaupur, Karanpur, Gagar Garh, Mahthi, Nainahia Jot, Naunjot, Chaksad, Harewa, Daulatpur, Chapara Mashraki, Ram Jangala Khas, Kusiari, Belauri, Gopalpur, Sonari, Malauli, Parsa Khurd, Bhatpar, Chhapia, Rustampur, Sihari, Parasir, Shah Patti, Dudhra <i>urf</i> Khaira, Ganeshpur, Dudhra Khurd, Jamalpur, Bhikharipur, Bhauwapar, Gunwatia, Sarraiya, Searam Adhin Singh, Dhamchia, Nagahara, Kondra, Chormara, Jakhauti, Belma, Tama, Kushphera, Gaighat, Bhagta, Baranw, Vishnupur, Nakaha,

By order,
Manoj Kumar Singh,
Additional Chief Secretary.

रजिस्टर्ड नं०-ए०डी०-४
लाइसेन्स सं०-डब्ल्यू०पी०-४१
(लाइसेन्स टू पोस्ट बिदाउट प्रीप्रेमेन्ट)



सरकारी गज़्ट, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित

प्रयागराज, शनिवार, 12 अक्टूबर, 2024 ई० (आश्विन 20, 1946 शक संवत्)

भाग 1-क

नियम, कार्य विधियां, आज्ञायें, विज्ञप्तियां इत्यादि, जिनको उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महोदय, विभिन्न विभागों के अध्यक्ष तथा राजस्व परिषद् ने जारी किया।

स्थानीय निधि लेखा परीक्षा विभाग

30 जून, 2023 ई०

सं० अधि०/२०२३/क-३४८-स्थानीय निधि लेखा परीक्षा विभाग के समूह "ख" के निम्नलिखित अधिकारियों का स्थानांतरण उनके स्तम्भ-३ में अंकित स्थान से स्तम्भ-४ में अंकित स्थान पर तत्काल प्रभाव से किया जाता है।

क्रमांक	अधिकारी का नाम	वर्तमान तैनाती के कार्यालय का नाम	नवीन तैनाती के कार्यालय का नाम	अन्युक्ति
1	2	3	4	5
सर्वश्री / सुश्री—				
1	आशुतोष कुमार राय	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, आजमगढ़	जिला लेखा परीक्षा अधिकारी कार्यालय, रायबरेली	जनहित में
2	अरविन्द कुमार	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, सुल्तानपुर	जिला लेखा परीक्षा अधिकारी कार्यालय, सीतापुर	जनहित में
3	शिवानन्द शरण त्रिपाठी	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, रायबरेली	जिला लेखा परीक्षा अधिकारी कार्यालय, आगरा	जनहित में
4	अंतरा बनर्जी	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, बाराबंकी	जिला लेखा परीक्षा अधिकारी कार्यालय, उन्नाव	जनहित में

1

2

3

4

5

सर्वश्री / सुश्री—

5	राकेश कुमार	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, चंदौली	जिला लेखा परीक्षा अधिकारी कार्यालय, बाराबंकी	जनहित में
6	संजय वैश्य	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, उन्नाव	जिला लेखा परीक्षा अधिकारी कार्यालय, सुल्तानपुर	जनहित में
7	रेनुका राव	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, प्रयागराज	जिला लेखा परीक्षा अधिकारी कार्यालय, देवरिया	स्वयं के अनुसार पर
8	पवन कुमार सिंह	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, गोण्डा	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, औरैया	स्वयं के अनुसार पर
9	अरविन्द कुमार सिंघल	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, महराजगंज	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, हाथरस	स्वयं के अनुसार पर
10	टिवंकल गोयल	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, आगरा	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, गाजियाबाद	स्वयं के अनुसार पर
11	शुभम् सिंह	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, मथुरा	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, बिजनौर	स्वयं के अनुसार पर
12	नूपुर श्री सिन्हा	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, जौनपुर	जिला लेखा परीक्षा कार्यालय, हरदोई	स्वयं के अनुसार पर

2— यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू होगा।

3— स्वयं के अनुसार पर किये गये स्थानांतरण हेतु किसी प्रकार का स्थानांतरण यात्रा-भत्ता देय नहीं होगा।

अजय कुमार सिंह,
निदेशक।

जनता के प्रयोजनार्थ भूमि नियोजन की विज्ञप्ति

प्रारूप—19

[(नियम 27 का उपनियम (1))]

समुचित सरकार/कलेक्टर द्वारा घोषणा

[अधिनियम की धारा-19 की उपधारा (1) के अंतर्गत]

दिनांक 12 सितम्बर, 2024 ई०

अधिसूचना

संख्या-4357 / आठ-वि०भू०अ०अ० (स०स०) सहारनपुर—चूंकि प्रारम्भिक अधिसूचना संख्या 3506 / आठ-वि०भू०अ०अ०(स०स०) सहारनपुर दिनांक 14 जून, 2024 लोक प्रयोजन, अर्थात् लोक निर्माण विभाग, उत्तर प्रदेश के

माध्यम से डी०एफ०सी०सी० रुट के मेरठ-सहारनपुर रेल सेक्षन के सम्पार संख्या 43-ए किमी. 09 / 0-1 सकौती टाण्डा खतौली रेलवे स्टेशन के मध्य एवं खतौली शुगर मिल सड़क मार्ग पर रेलवे उपरिगामी सेतु एवं पहुँच मार्ग का निर्माण हेतु मुजफ्फरनगर की तहसील खतौली के ग्राम खतौली का कुल रकबा 0.0609 हेक्टेयर भूमि के सम्बन्ध में भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता का अधिकार अधिनियम, 2013[अधिनियम संख्या-30 सन 2013(जिसे आगे उक्त अधिनियम कहा गया है।)] की धारा-11 की उपधारा (1) के अन्तर्गत जो प्रारम्भिक अधिसूचना दिनांक 14 जून, 2024 को जारी की गयी तथा स्थानीय समाचार पत्र (हिन्दुस्तान और दैनिक जागरण) में प्रकाशित की गयी थी।

अधिनियम की धारा-15 की उपधारा (2) के प्राविधानों के अनुपालन में प्रस्तुत रिपोर्ट के विचारोपरांत कलेक्टर उक्त अधिनियम की धारा-19(1) के अंतर्गत घोषणा करते हैं कि उनका यह समाधान हो गया है की नीचे अनुसूची "क" में वर्णित भूमि का क्षेत्रफल लोक प्रयोजन हेतु आवश्यक है तथा अनुसूची "ख" में यथा—प्रदत्त ग्राम, परगना, और जिला में कोई भूमि विस्थापित परिवार के पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन के लिए चिह्नित नहीं की गयी है। (इस परियोजना हेतु भूमि अर्जन के कारण किसी परिवार का विस्थापित होना सम्भाव्य नहीं है।)

कलेक्टर अग्रेतर उक्त अधिनियम की धारा-19 की उपधारा(2) के अधीन इस आशय की घोषणा के प्रकाशन के साथ पुनर्वासन एवं पुनर्व्यवस्थापन योजना के सारांश के प्रकाशित करने के लिये निर्देश देते हैं। चूंकि जनपद मुजफ्फरनगर में डी०एफ०सी०सी० रुट के मेरठ—सहारनपुर रेल सेक्षन के सम्पार संख्या 43-ए किमी. 09 / 0-1 सकौती टाण्डा खतौली रेलवे स्टेशन के मध्य एवं खतौली शुगर मिल सड़क मार्ग पर रेलवे उपरिगामी सेतु एवं पहुँच मार्ग के निर्माण हेतु भूमि अर्जन से कोई परिवार विस्थापित न होने के कारण पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन हेतु किसी भूमि को चिह्नित करने और पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन योजना के सारांश के प्रकाशन की कोई आवश्यकता नहीं है।

अधिसूचना—"क"

(प्रस्तावित अर्जन के अंतर्गत भूमि)

जनपद	तहसील	परगना	ग्राम	भू-खण्ड संख्या	अर्जित किये जाने वाला क्षेत्रफल
1	2	3	4	5	6
हेक्टेयर					
मुजफ्फरनगर	खतौली	खतौली	खतौली ग्रामीण	872—म	0.0127
मुजफ्फरनगर	खतौली	खतौली	खतौली ग्रामीण	882 / 1	0.0482
योग					0.0609

अधिसूचना—“ख”

(विस्थापित परिवारों के लिए व्यस्थापन क्षेत्र के रूप में चिन्हित भूमि)

जनपद	तहसील	परगना	ग्राम	भू-खण्ड संख्या	अर्जित किये जाने वाला क्षेत्रफल
1	2	3	4	5	6
हेक्टेयर में					
मुजफ्फरनगर	खतौली	खतौली	—	—	—

(इस परियोजना हेतु भूमि अर्जन के कारण किसी परिवार का विस्थापित होना संभाव्य नहीं है।)

टिप्पणी :— उक्त भूमि का स्थल नक्शा, कलेक्टर मुजफ्फरनगर के कार्यालय में देखा जा सकता है।

ह0 (अस्पष्ट)

कलेक्टर

मुजफ्फरनगर

पी0एस0यू0पी0-28 हिन्दी गजट—भाग 1-क—2024 ई0।

मुद्रक एवं प्रकाशक—निदेशक, मुद्रण एवं लेखन-सामग्री, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

रजिस्टर्ड नं०-ए०डी०-४
लाइसेन्स सं०-डब्ल्यू०पी०-४१
(लाइसेन्स टू पोस्ट बिदाउट प्रीप्रेमेन्ट)



सरकारी गज़्ट, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित

प्रयागराज, शनिवार, 12 अक्टूबर, 2024 ई० (आश्विन 20, 1946 शक संवत्)

भाग 7-ख

इलेक्शन कमीशन ऑफ इंडिया की अनुचित तथा अन्य निर्वाचन सम्बन्धी विज्ञप्तियां

भारत निर्वाचन आयोग

06 मार्च, 2024 ई०
नई दिल्ली, तारीख _____
16 फाल्गुन, 1945 (शक)

अधिसूचना

सं० 82/उ०प्र०-वि०स०/१०/२०२२(इला०)–लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 (1951 का 43) की धारा 106 के अनुसरण में, भारत निर्वाचन आयोग वर्ष 2022 की निर्वाचन अर्जी संख्या 10 में माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद के दिनांक 22 दिसम्बर, 2023 के निर्णय को एतद्वारा प्रकाशित करता है।

आदेश से,
पवन दीवान,
सचिव,
भारत निर्वाचन आयोग।

आज्ञा से,
नवदीप रिणवा,
प्रमुख सचिव।

ELECTION COMMISSION OF INDIA*6th March, 2024**New Delhi, dated**16th Phalguna, 1945 (Saka)***NOTIFICATION**

No. 82/UP-LA/10/2022(Alld.)—In pursuance of Section 106 of the Representation of the People Act, 1951 (43 of 1951), the Election Commission of India hereby publishes the Judgement dated 22nd December, 2023 of the Hon'ble High Court of Judicature at Allahabad, Allahabad in Election Petition No. 10 of 2022.

By order,

PAWAN DIWAN,

Secretary,

Election Commission of India.

By order,

NAVDEEP RINWA,

Principal Secretary.

Neutral Citation No. - 2023:AHC:243220

Judgement reserved on 04.08.2023

Judgment delivered on 22.12.2023

Court No. - 34

‘ AFR’

Case :- ELECTION PETITION No. - 10 of 2022

Petitioner :- Prashant Kumar Singh

Respondent :- Hakim Lal

Counsel for Petitioner :- In Person, Mithilesh Kumar Rai, Prashant Kumar Singh (In Person), Vijay Kumar Singh

Counsel for Respondent :- Narendra Kumar Pandey, Piyush Shukla

Hon'ble Ajit Kumar, J.

1. Heard Sri Narendra Kumar Pandey, learned counsel for the respondent-returned candidate, namely, Hakim Lal.

2. The election petition questions election to the constituency 58 Handia, district of Prayagraj for the U.P. State legislative assembly. The returned candidate Mr. Hakim Lal has moved application to reject election petitioner under Section 86(1) of the Representation of People Act, 1951 (for short R.P. Act) and also under rule 11(a) of Order VII of CPC. There is another misc. application under Order VI Rule 16 CPC.

3. The election petition questions the election of returned candidate Mr. Hakim Lal for corrupt practise at his end that led to his victory.

4. It was submitted by learned counsel appearing for the returned candidate that petitioner was eligible to contest the election of the legislative assembly of the State and earned no disqualification either under the R.P. Act, 1951 or under the Constitution of India vide its Article 173. It was further submitted that affidavit that contained necessary information on a printed format prescribed for under Rule 4-a read with Section 33 of the R.P. Act, 1951, is meant for display both on the conspicuous place by returning officer, inasmuch as, uploaded on the official website of the State Election Officer. He submitted that such an information continues to be available on the official website and anybody can have easy access to the same. It was also argued that political parties are also required to publish such information regarding their respective candidates and, therefore, every information is made available in the public domain before the election is held and so nobody can be mislead as to credentials of a candidate in public election.

5. He submitted that Section 83(1) provided for an election petition to contain concise statement of material facts upon which petitioner relies and then to set-forth the material particulars of any corrupt practise that is alleged by the petitioner indicating the name of parties who committed such corrupt practise, then date and place of commission of such practise, the petition to be verified and signed by the petitioner and then proviso to Section 83(1), further required election petitioner to file an affidavit to accompany the election petition in a prescribed format in support of allegations of such corrupt practise and particulars thereof.

6. It was argued that subsection 2 of Section 83 provided that schedule or annexure appended to the petition shall also be signed by the petitioner and in the event if any of these were found to be lacking in an election petition it would deserve dismissal. He submitted that since affidavit was available in the public domain, it ought to have been filed in support of the pleadings, that would have clarified the allegations made as the pleadings, according to him, raised in the relevant paragraphs were quite vague. He also argued that since manner in which pleadings had been raised appeared to be frivolous and vexatious for want of specific and concise statement as to the corrupt practise and the Court even might strike down such pleadings.

7. Now to examine the pleadings as to ground no. 8-a and the pleadings in respect thereof made in paragraph 10 of the election petition, learned Advocate took the Court to the affidavit accompanying election petition as required as per proviso to Section 83-1 of the R.P. Act, 1951.

8. Arguing in support of miscellaneous applications Sri Pandey submitted that election petition on the ground that nomination paper and affidavit on form 26 were not properly filled as per Section 33 and 33-A of the R.P. Act, itself was not maintainable for the reason that no such nomination form as filed under Section 33 nor, form 26 accompanied it. He submitted that Section 33 of the R.P. Act, 1951 referred to nomination paper to be completed and filled on prescribed format. The form was prescribed under Rule 4 of the 1961 Rules and nomination paper was given as form 2-b. He submitted that prior to the Amending Act no. 72 of 2002 whereby Section 33-A was inserted after Section 33, further rule 4-a came to be inserted after Rule 4 under Rules 1961 and then part III-A also came to be added. He submitted that form 26 was altogether a different form prescribed for under Rule 4-a read with Section 33-A and the column that were referred to in part 'a' and part 'b' of that form had nothing to do with Section 33. In so far as information furnished by the candidate in form 26 was concerned, it was submitted that there was description of criminal antecedents. He submitted that ground though talked of criminal antecedents not having been disclosed, but this ground has not been developed in pleadings to be a "*concise statement of material facts*" and "*full particulars of corrupt practise*" so as to maintain election petition under Section 81

of the R.P. Act, 1951. It was submitted that the ground was that description of criminal antecedents had resulted in unduly influencing the voter in casting their votes in favour of the returned candidate being quite vague and misleading.

9. It was submitted that in paragraph 10, it was stated that 'part- a column 5', dealt with information of pending criminal cases and while in 5-i, the candidate had put mark "(√)". He had to argue further in detail the pending criminal case in column 5 ii and then later on it was stated in paragraph 10 that petitioner instead of referring to any first information report with details of criminal case number or year of complaint case number had merely referred to range case number and this according to the election petitioner was enough to misguide and mislead the voters inasmuch as information so far furnished was also fake one.

10. It was further submitted that statement in paragraphs were to the effect that in absence of first information report number, case number, or year number, there was no possibility to trace out the details of the case and resultantly no verification could have been done and so likewise since no registration of the case number was disclosed in column 5-ii, he found on verification from the court of ACJM-5, Prayagraj that at that time no such case was pending in the court's record diary. Thus even this fact was quite misleading, likewise other informations furnished in other sub columns of the column 5 had been claimed to be misleading.

11. Learned counsel for the returned candidate submitted that furnishing of information as zero in column 11(v) of part- b was not wrong as declaration was made by the respondent himself that three criminal cases were pending. Learned counsel for the returned candidate, therefore argued that then in the first instance if there was no pending case in the court of ACJM as is claimed by election petitioner as per verification obtained by him, mentioning of zero in respect of any criminal case would certainly not be misleading. He further submitted that if range case has been referred to in column 5-ii ka, it is because there was no first information report lodged as such by any private person but it was forest department which would register a as case referred to as a range case relating to a particular forest range.

12. Besides above, he argued that no details had been given regarding particular case number or regarding any particular incident that election petitioner had the knowledge or regarding which he acquired the knowledge so as to suggest by way of pleading that information furnished by the petitioner was misleading and that had caused undue influence upon the voters in their free exercise of franchise in an open general election.

13. Thus, it is submitted that since paragraphs that are in support of ground no. 8-A do not contain the material particulars so as to hold there to be any specific material fact and contents of paragraph are quite vague also and so it can be safely concluded that allegations do not meet parameters of clauses a and b of sub section 1 of Section 83 of the Act, 1951.

14. On affidavit accompanying the election petition, counsel for the respondent submits that proviso to sub section 1 of Section 83, requires an affidavit of corrupt practice but the affidavit only refers to certain criminal antecedents and non closure of movable or immovable properties only and there is no reference to any 'corrupt practice' as such as has come to be referred to under section 23 of the R.P. Act, 1951. So affidavit itself is not sufficient to meet requirement of law. He would take this argument further by submitting that affidavit has been sworn on personal knowledge.

15. In so far as paragraph 10 to 19 are concerned it was submitted that what was personal knowledge about non disclosure or concealment of material fact has not been detailed out. It was submitted that personal knowledge of given case can be had so as to make a substantive allegation in support of the ground raised in the petition but that personal knowledge must be specific and concise so as to refer to a

particular criminal case or criminal antecedent. It was argued that in order to support this personal knowledge, the affidavit ought to have formed part of the election petition or the affidavit as required under proviso to sub section 1 and 2 of Section 83 of the Act, 1951 but that had not been done. It was submitted, therefore, that affidavit being defective not supporting the election petition as such regarding corrupt practise, grounds taken as 8A, 8B of the election petition, the petition deserved to be dismissed.

16. It is argued that criminal antecedents or declaration of criminal antecedents by itself would not be a corrupt practise within definition as given thereof under section 123 of the Representation of People Act, 1951.

17. Summarizing the argument, following points have been pressed regarding undue influence in which grounds have been raised as ground nos. 8-A and 8-B, 8C and 8D.

(i) the pleadings raised in paragraph 10 and 11 in support thereof do not contain concise statement as to the material fact that may have resulted into corrupt practise of undue influence;

(ii) since allegations raised in the ground supported by pleadings vide paragraph 10 and 11 of the election petition referred to form 26 and the averments are based on personal knowledge, the said form being the basis of the information disclosed and/ or not disclosed so as to suggest suppression of material information, ought to have been annexed alongwith election petition as it also forms integral part as per sub section 2 of Section 83 and in absence of this material in support of pleadings based upon this document, election petition was liable to be rendered incomplete and having been supplied so also to the defendant respondent as per Section 81(3) of the R.P. Act, 1951.

(iii) The objection which has been raised for non compliance of proviso to Section 83(1) of the Act, 1951 as it ought to have expressly referred to corrupt practise as defined under Section 123 of the R.P. Act, 1951 and mere words and expression suppression of material information, would not by itself be a corrupt practise inasmuch as swearing of the paragraph nos. 1,2,3,4,5 and 6 is the nature without specifying as to which part of it is based on personal knowledge and which part is based on information and so is liable to be rendered vague not within the meaning of proviso to Section 83(1) of the Representation of People Act, 1951. Such details therefore would not be sufficient within the meaning of Section 83(i) (b) of the Act, 1951.

(iv) There is no disclosure of the names of the person agents or representatives from whom information has been received *qua* corrupt practise and, therefore, allegations are vague in the affidavit. Taking the entire pleadings together and grounds raised the averments to not lead to constitute a cause of action for vagueness and the nomination papers were wrongly and illegally accepted by the Election Officer.

18. Yet another argument has been advanced that parties relying upon the documents in support of the pleadings raised ought to have filed the same alongwith election petition, it being integral part, as per Section 81(i)(3) of the Representation of the People Act, 1951.

19. In support of arguments advanced by learned Advocate Mr. N.K. Pandey and authorities relied upon are **M. Karunanidhi v. H.V. Handa and Others**, AIR 1983 SC 558, **U.S. Sasidharan v. K. Karunakaran and Another**, AIR 1990 SC 924, **Mulayam Singh Yadav v. Dharampal Yadav and Others**, (2001) 7 SCC 98, **Ram Sukh v. Dinesh Aggarwal** (2009) 10 SCC 541, **V. Narayanaswamy v. C.P. Thirunavukkarasu** (2000) 2 SCC 294 and **Mayar (H.K.) Ltd. And Others v. Owners and Parties, Vessel M. V. Fortune Express and Others** (2006) 3SCC 100.

20. Meeting the argument, learned Senior Advocate Mr. Prasad appearing for the election petitioner has argued that petition under Section 86(1) of the R.P. Act can only be dismissed if it does not comply with the provisions as contained under Sections 81 and 82 and Section 117 of the R.P. Act. He

submits that non-compliance of the Section 83 cannot be a ground for a dismissal of election petition under Section 86(1). He submits that rules have been framed by the High Court in exercising the power under Section 225 of the Constitution of India to laying down the procedure for presentation and disposal of the election petition. According to him, this power has an overriding effect upon the provisions contained under Order VI Rule 14 C.P.C. He argues that chapter 15(A) Rule 3 of the High Court rules provides the election petition should be presented along with a list of documents. This according to him is a departure from the procedure prescribed under Order VI Rule 14 where documents were required to be appended with the plaint. He has argued that in the case of *Kailash Vs. Nanku* 2005 law suit it has been held by the Supreme Court vide paragraph 11 of the Allahabad High Court rules framed under chapter 15(A) consisting of 13 rules are special provisions relating to the trial of election petitions and there is no conflict between the rules framed by the High Court and rules under the R.P. Act and the C.P.C. It has been argued by learned Senior Advocate that reference of the document in the paragraph by itself is sufficient and it is not necessary to file those documents also. As according to him, placing reliance upon a document, if the allegations are sufficiently made in the election petition, would be of only evidentiary value and that can be filed at a later stage when the opportunity is afforded to file evidence.

21. Taking the argument further, learned Senior Advocate Mr. Manish Goel has submitted that if the contents of a document have been detailed out in the pleadings then such document is not required to be filed along with election petition and will be only of evidentiary value. He has drawn the attention of the Court, towards paragraph 15 and 16 of the judgment in the case of **U. S. Sashidharan Vs. K. Karunakaran and anther AIR 1990 SC Page 424** wherein the legal principle has been discussed in detail and it has been held that if the contents of the document are pleaded in the election petition. Then such documents does not form an integral part of the election petition. Learned counsel for the petition submitted that in that case the Court require the audio cassette in that case form also as to form an integral part of the election petition because the audio cassette titled as Malayudi Purogathi because the contents of the audio cassette were not pleaded in the election petition. Learned Senior Advocate has also relied upon the judgment in the case of **M. Karunanidhi Vs. H.P. Handa and others** where the Supreme Court after discussing a number of judgments had already held by paragraph 34 and 35 that if the allegations as to the pamphlet could be detailed in the pleadings and held that if the proper contents have been detailed out regarding a document in the pleading part of the election petition then such a document would only be an evidence. In proof of the averments so need not be filed with the election petition.

22. It is submitted that since where clauses and the details that were filled in by the returned candidate in affidavit as per prescribed form 26, the said affidavit was not required to be filled. In so far as the allegations regarding verification of facts as to the criminal proceedings of which range case number was given in column 5(ii) (a), a mere statement was sufficient that verification was made from the Court record registered and no such case was found to be registered. However, he would admit that there is no date given about the inspection/verification. Mr. Manish Goel further submits that details of the form as filled in have already been averred in the paragraph 10 and 11 and merely because one verification was sought from the Court record was one verification was taken regarding one entry would not weaken other allegations made according to wrong information given in the affidavit. He further argues that rest of the paragraph had referred to various documents have demonstrated that they ought to have been declared as such correctly in the form, have already been filed and referred to in the schedule appended 2 in the election petition and complete set of the paper book has been served upon the returned candidate and other contesting respondents in the election petition.

23. The learned Senior Advocate Mr. Manish Goyal as well as Sri Ravi Shankar Prasad appearing for the election petitioner have also relied upon some more authorities of the Supreme Court in the case of **Kanomizhi Karunanidhi v. A. Santhana Kumar and Others passed in Special Leave Petition**

(C) No. 28241 of 2019 and A. Manju v. Prajwal Revanna @ Prajwal R and Others, (2022) 3SCC 269, Kantaru Rajeevaru (Sabarimala Temple Review-5J.) v. Indian Young Lawyers Association through Its General Secretary and Others (2020) 2 SCC 1, Union of India v. Association for Democratic Reforms and Another (2002) 5 SCC 294, Spencer & Company Ltd. And Another v. Vishwadarshan Distributors Pvt. Ltd. And Others (1995) 1SCC 259, Satish Ukey v. Devndra Gangadharao Fadnavis and Another (2019) 9 SCC 1, Madiraj Venkata Ramana Raju v. Peddireddigari Ramachandra Reddu and Others, AIR 2018 SC 3012 and Adesh Tyagi v. Mahesh Sharma 2020 SCC Online All 589.

24. Having heard learned counsel for the respective parties, noticing their arguments as above and authorities cited by learned Advocates and having perused the record, I find that the basic grounds upon which election petition is based, is of corrupt practice committed by returned candidate in getting elected in public election for the legislative assembly, and therefore, question that arises for consideration at this stage while I am dealing with miscellaneous applications are;

Whether the there has been concise statement of material facts regarding charge of corrupt practise and statements as to material particulars of corrupt practise and whether nomination and affidavit on form 26 would form an integral part of the election petition and not accompanying election paper, election petition would be liable to be dismissed under Section 81(1) of R.P. Act, 1951, and the second aspect that is required to be looked into; and

Whether election petition discloses a cause of action to maintain it and that the statement of facts are not so vexatious or vague so as to dismiss the petition at the very threshold under Order VII Rule 11 (a) of CPC.

25. In so far as **first point** that I need to address, relates to miscellaneous application moved by the returned candidate to reject the petition having not been presented in the form as is prescribed for that it not only lacks concise statement of material facts and material particular as to corrupt practise but is also not accompanied by document of nomination form and affidavit on form 26 which are claimed to be an integral part, and therefore, petition is liable to be rejected under Section 86(1) of the Representatives of the People Act, 1951.

26. The **second point** refers to miscellaneous application filed under Order 7 Rule 11 (a) of the CPC and Order 6 Rule 16 of the CPC to reject the petition as it does not disclose the cause of action even if it is taken in its entirety. The averments made in certain paragraphs in writ petition are alleged, to be quite vexatious and vague and deserve to be struck off.

27. Now coming to the **first point**, I need to first take into account the grounds upon which challenge to election petition has been developed in this petition. The first ground no. 8A is to the effect that material facts as to details of criminal cases that were required to be disclosed in affidavit on form-26 prescribed under the R.P. Act, were concealed and suppressed vide Column 5(ii) (a)(b) and (c) of part A of the form and then false declaration in Column 5 (ii) (e)(g) and then further in Column 11(5) of part B of form 26 of nomination form and Clause 6(A) and such practise would constitute corrupt practise of undue influence in terms of Section 123 (2) of R.P. Act read with Section 100 (1) (b) of the R.P. Act, 1950.

28. This suppression of criminal antecedents, to the credit of the returned candidate was, it was alleged deliberately done, in order to mislead public and such non disclosure or disclosure of misleading particulars vitiated the mandate contained under Section 33-A of the R.P. Act and Clause 6(A) note 5 of Form 26 a prescribed form of affidavit.

29. Similarly vide ground 8B, it is stated that Column7(A) (ii) (iii) (iv) (v), 7 (B) (i)(iii) and Column 8(i) of nomination form were not complete *qua* liability towards bank loan. So there was a deliberate attempt to suppress crucial facts relating to property, income and liability towards bank and has counted to corrupt practise.

30. Similar set of allegations have been made in ground no. 10 that relate to disclosure regarding pending criminal cases and charge is that returned candidate had put (✓) mark in affirmative in Column 5(ii) a-g and then details recording FIR number name of police station with address where criminal cases have been registered, were not at all disclosed and only disclosure was ‘range case’ number in Column 5 (ii) (a) which amounted to a fake information. Neither year, nor police station was disclosed and similarly in Column 5 (ii) (b)(c) no registration number of the case was disclosed and when he enquired from the court of ACJM vth, Prayagraj, then it was found that no such case was registered in the court’s diary that was maintained to mention cases. Similarly, information was stated to be misleading in Column 5 (ii) (d). Again in column 5 (ii) (e), the disclosure of date of charge was given while the Court had taken cognizance upon the charge by summoning the returned candidate. Since there was no proper nomination paper filed giving all those particulars required, of which verification was to be done by the election officer as to whether requisite form 26 was properly filled up or not as required under Section 33A of the R.P. Act and the manner in which it was filled, it was intended to unduly influence the voter.

31. One of the grounds, therefore, is that acceptance of nomination paper of the returned candidate was against provision of Section 33 of the Act read with Rule 4 of Conduct of Election Rules, 1961.

32. Sri Pandey, since has mainly attacked on these three grounds to be not only vague confusing but lacking concise statement of material facts and also material particulars in relation to corrupt practise of non disclosure of relevant case number and confusing declaration in affidavit that makes nomination form to be defective and yet despite mentioning of these documents as item number 1 in the schedule, they were not made part of the election petition by appending them with to make election petition competent and further that affidavit that was required to be filed indicating corrupt practise as such was not as mandated, I proceed to examine these grounds and the facts stated in support thereof in the first place to answer the question raised regarding maintainability of this petition.

33. As to first point above to which ground no. 8A, 8B and 8C and paragraph nos. 10 and 1 are relevant, these grounds and paragraphs are being reproduced hereunder:

“8A Because returned candidate while delivering the nomination form in term of section 33 of the Act deliberately not disclosed and suppressed of facts regarding criminal antecedents in entirety with full details in part A Column 5 (ii) (ka) (kha) (ga) and made a false declaration in part A Column 5 (ii) (ng) (chha) as well as in Part B column 11 (5) of form 26 of nomination form which constitute a corrupt practice of undue influence in terms of section 123 (2) and covered under section 100 91(b) of the Act, especially where the returned candidate has special knowledge of the pending cases in which the court has taken cognizance upon the charge. Deliberate attempt to suppress the criminal antecedents required to be inform as mandated by section 33A of the Act and clause 6(ka) note 5 of form 26 would effort to misguide and keep the people/voter in dark; thus it is undue influence and its amounts to corrupt practice in terms of section 123(2) of the Act as the section 33 A of the Act and rule 4-A creates impediment upon the candidates to disclose information in free exercise of electoral right.

8B. Because returned candidate while delivered the nomination form in term of section 33 of the Act deliberately not disclosed and suppressed the material facts regarding the movable, immovable property and liability towards banks loan, the account shown in part A column 7 (a) (ii) (iii)(iv) (v) column 7 (b), (i)(iii) and column 8 (I) in entirety is incomplete and the full detail of bank accounts, property, share in joint family property and proprietorship business has been suppressed by the returned candidate which constitute corrupt practise of undue influence covered under section 100 (1)(b) of the Act, especially where the returned candidate has special knowledge of the transition. Deliberate attempt to suppress the property, income and liability of the bank

required to be furnishing as mandated by section 33-A of the Act would effort to misguide and keep the people in dark, Thus it is undue influence. The act of returned candidate amounts to corrupt practise under section 12(2), thereby covered under section 100 (i)(b) of the Act.

8C. Because returning officer improperly accepted the nomination paper of Returned Candidate against the provision of section 33 of the Act read with rule 4 of the conduct of election Rule 1961 and failed to adhere with the provision of section 36 of the Act thus the election of the returned candidate from 258 legislative assembly constituencies is required to be declared void.

10. That the returned candidate delivered his nomination from accompanying with form 26 in terms of section 33 of the Act read with Rule 4 of the conduct of election Rules 1961 on 05.02.2022. The form 26 contains in two parts; Part “A” column 1 to 4 was filled up by the returned candidate where the personal details of himself, spouse and his dependents were furnished. Part “A” column 5 deals with the information of pending criminal cases. This column further divided into two parts; first part 5(i) requires that if there is no criminal case pending against the candidate he puts the mark ‘ ‘ against the column 5(i) and it further says that if there is a criminal case pending against the candidate he put the mark ‘ ‘ against column 5(ii) and furnish the details of pending criminal cases in later part of column 5(ii) ka-chha. The returned candidate put the mark ‘ ‘ against column 5 (ii) and declared that criminal case was pending against him Column 5 (ii) (ka) mandate the information of FIR number and the name of the police station with the address where the criminal case has registered. The returned candidate instead of furnishing the FIR No. or case crime no. and year or complaint case no. and year with the name and address of the police station or court filled up the column 5 (ii) (ka) as “range case no.” and year to misguide the voters. In fact this was a fake information and the some sections were also not in-existence moreover the criminal or complaint case are being identified in the State of U.P. from the FIR no./case crime no. with the particular years and police station. In each police station there is separate register maintain permanently for the registration of each crime known as FIR Register and in absence of the FIR no. , date and year or case crime no., date year or complaint case no. and year or details of court it could not be possible to trace out the detail of case. Since each police station there is separate numbers allotted to the crime and in complaint case separate no. of complaint and year has been registered by the concerned court. Therefore in absence of FIR no. year or name of the police station and its address or complaint case no. year, or details of court description the information of case could not be possible. Likewise the return candidate to misguide and keep the people /voter in dark in order to make undue influence upon them irrelevant and fake information has furnished in part A column 5(ii)(ka), likewise in column 5(ii) (kha) (ga) the return candidate id not disclose the registration of case no., year registered in court. The returned candidate further given a false declaration that criminal case is pending in the court of ACJM 5 Prayagraj while at the time of declaration i.e. 05.02.2022 no such case was found in the court record diary maintain for the functioning of court. The false declaration is made to misguide and keep people in dark. In column 5(ii) (gha) the return candidate did not describe the details of offence while against column no. 5 (ii) (ng) declared as “no” while in his case the court has taken the cognizance on filling a charge and summoned the return candidate. In column 5 (ii) (cha) mentioned that disclosure of the date of charge is not applicable while in fact the court had taken the cognizance on the charge and summoned the return candidate.”

34. Upon bare reading of these above grounds as quoted above three questions basically emerge for consideration to meet firstpoint, as follow:

a. whether there is concise statement of material facts and material particulars have been set forth as to criminal antecedents referred in paragraphs so as to arrive at conclusion that there was suppression or concealment of fact;

b. whether facts detailed in paragraphs amount to concise statement as to the misleading facts in the nomination paper/form so as to arrive at conclusion that these things have mislead the electorate; and

c. whether facts referred to in paragraph are concise and specific statement detailed in the nomination form and the affidavit referable to form 26 so as to reduce these documents of an evidentiary value only and not an integral part of the election petition.

35. In order to appreciate the above, one must keep in mind that election laws that provide for an opportunity to losing candidate to question election petition is not a common law remedy and being a statutory remedy, it is always to be ensured that petition presented must conform to the requirements of election law and this is why it is stated that provisions of the statute dealing with election laws that provided statutory remedy, must be strictly construed (**FA Sapa v. Singoria**) 1991 SCC 375. Still further while election Tribunal is dealing with an election petition on the ground of corrupt practise then allegations are not only to be specific but very clear so as to form a view that if statement of fact made, if proved, it will lead to irresistible conclusion of unseating an elected candidate on such charge. Thus it is clear that any fraudulent practise if taken as a ground and does not give a concise material fact statement leading two equal inferences, then pleadings deserve to be dismissed. (**Daulatram Chauhan v. Anand Sharma** (1984) 2 SCC 64.

36. Making a distinction between material facts and particulars, speaking for the bench of C.K.Thakur, J in the case of **Virendra Nath Gautam v. Satpal Singh and Others**, (2007) 3 SCC 617 have observed vide paragraph 50 thus:

*"50. There is distinction between *facta probanda* (the facts required to be proved i.e. material facts) and *facta probantia* (the facts by means of which they are proved i.e. particulars or evidence). It is settled law that pleadings must contain only *facta probanda* and not *facta probantia*. The material facts on which the party relies for his claim are called *facta probanda* and they must be stated in the pleadings. But the facts or facts by means of which *facta probanda* (material facts) are proved and which are in the nature of *facta probantia* (particulars or evidence) need not be set out in the pleadings. They are not facts in issue, but only relevant facts required to be proved at the trial in order to establish the fact in issue."*

37. Now when one refers to material facts, the Courts have also held that particulars have evidentiary value if material facts are very specific and detail out particulars which may not be then necessary for the document to accompany the election petition. In the case of **M. Karunanidhi (supra)** the Court had referred to its earlier judgment of the Supreme Court in the case of **Sahodrabai Rai v. Ram Singh Aharwar** (1968) 3 SCR 13 (AIR 1968 SC 1) to draw conclusion as to when particular document would not require to accompany election petition, as in that case details published in the pamphlet were reproduced in the election petition itself which led to the court to conclude that pamphlet would not be an integral part of the election petition and would be only evidence of what has been averred, as a proof thereof and that is why the Court observed that "*it follows as a necessary corollary that if pamphlet had not been incorporated in the body of the election petition, decision of the Court in Sahodrabai Rai's case (supra), would have been otherwise..."*

38. These above legal propositions regarding statement of material facts and document to accompany petition or not, as discussed above, have been repeatedly followed in various authorities of Supreme Court and this Court but it is equally clear as to what particular given in a document referable to grounds would amount to an integral part of the election petition, would depend upon case to case. So every election petition has to be examined in respect of statement of facts made and particulars of corrupt practise referred to, so as to arrive to an answer to the question whether there is concise statement of material facts and material particulars to maintain election petition and that every document referred to therein would only be of an evidentiary value only and not an integral part thereof.

39. Now examining the grounds raised in the grounds 8A , 8B & 8C, I find that they particularly indicate to certain details given in the affidavit as prescribed on form 26 under the R.P. Act. Column 5 of the form relates to pending criminal cases and clause (i) thereof prescribes for various columns for details of pending cases. Clause ii of the form prescribes for cases in which conviction has been done. Now reverting to the grounds as quoted above, I find that in ground 8A the only concise statement, if at all to be referred to, is to the suppression of material facts regarding criminal antecedents and then a false declaration. In the column referred to hereinabove so as to develop ground of corrupt practise in terms of Section 100 (1) (b) and Section 123 (2), what are the criminal antecedents, what kind of misleading statements have been made, what kind of material particulars have been suppressed, has not been referred to at all. In paragraphs 10 and 11, the defects are cited in form 26 which is required to be furnished and which is in two part referable to information in pending criminal cases, and the cases in which it is alleged that charges have been framed. The only particular fact that occurs in paragraph 10 is with regard to 'Range Case Number' given in column number 5 (ii) (a) of the form, but again at the strength of some information obtained from the Court of ACJM- V, Prayagraj, it is alleged that no such case was mentioned in the courts' diary. It is alleged that though there is mention not in front of Column 5 (ii) (e) but Court in that case, it is alleged, had taken cognizance on filing of chargesheet and had summoned the returned candidate. This is all vague for want of date of access to court's diary, sanction letter for inspection of court's diary etc.

40. Having discussed these above details, I find that the allegations are as to the suppression of material fact and misleading / mis-statement of facts as to the some particular criminal cases pending or registered against the returned candidate and allegations are that by this act, he created confusion in mind of electorate and got them unduly influenced to vote in his favour. So all this has been stated to make out a case of corrupt practise and corrupt practise of undue influence as well, referable to Section 123(2). This cannot be said to be a concise statement of material facts for want of material particular details as to the corrupt practise. They are quite vague as to words and expression "Suppression and mis statement". These statements of facts in the ground cannot be said to be the concise statement of material facts and particulars as to the corrupt practice to meet mandatory requirement of Section 83 (1)(a) and (b).

41. In the case of Ram Sukh (*supra*) cited by learned counsel for the applicant, it has been clearly held vide paragraph 24 thus: "*It needs little reiteration that for the purpose of Section 100 (1)*

(d) (iv), it was necessary for the election petitioner to aver specifically in what manner the result of the election insofar as it concerned the first respondent was materially affected due to the said omission on the part of the Returning Officer. Unfortunately, such averment is missing in the election petition. "

42. Whenever it comes to entertain an election petition on the charge of corrupt practise, it is to be taken as serious issue because it does not question the election but if election is held void it may lead to debarring a candidate for future election upto 6 years and, therefore, it is held that "*an election petition in which corrupt practise is alleged stands on a different footing from election petition which does not to carry such allegation. The legislature has special care to ensure that the ordinary verification will not*

suffice" and the Court therefore, rightly held that the person making an allegation of corrupt practise must bear in mind seriousness of such charge, and therefore, he has to be very precise and specific in making allegations giving concise statement of material facts and then material particulars as required under Section 83(1) (a) (b). The allegations must be so clear and specific that inference of corrupt practise will irresistibly admit no doubt or question (Daulatram Chauhan v. Anand Sharma (1984) 2 SCC 64) Vide paragraph 18 the Supreme Court in the case of **K. M. Mani v P. J. Antony And Others, 1979 2 SCC 221** has observed thus:-

"23. An allegation regarding the commission of a corrupt practice at an election is a very serious matter not only for the candidate but for the public at large as it relates to the purity of the electoral process. Where therefore the allegation relates to the charge that a candidate obtained the assistance of a police officer for the purpose of addressing a meeting on the eve of the poll and exhorting those present to work for his victory, it is reasonable to expect that, wherever possible, a transcript of his speech shall be made available to the Court in support of the allegation. Besides furnishing the precise material relating to the allegation to the Court, it has the advantage of giving the respondent an opportunity of meeting a precise allegation. But it may be that this may not be possible in a given situation. In that case it will be reasonable and fair to expect that the election petitioner will produce a contemporaneous record of the points that were made in the speech, or at least its substance. But no such record has been made available in this case ... "

43. In the case of **U.S. Sasidharan (supra)**, it was very categorically held vide paragraph 12 "*it is apparent from clauses (a) and (b) of S. 83 that an election petition shall contain a concise statement of the material facts and also set forth full particulars of any corrupt practice. These two requirements are also mandatory in nature. So, whenever there is an allegation of corrupt practice, the election petition shall contain a concise statement as to the material fact on which the petitioner relies and also must set forth full particulars of the corrupt practice alleged by the petitioner.*"

44. Thus question (a) is answered in negative and so in favour of returned candidate.

45. Now if the allegations, therefore, upon bare reading of the statement of facts and statement of particulars are found related to particular document as in this case nomination paper and affidavit do not lead to definite conclusion to form a view of such corrupt practise, it would be necessary that such document accompanied the election petition as it would be forming an integral part thereof in such circumstances.

46. Besides the above in context of material facts/ material particulars relating to corrupt practise may be contained in a document without pleadings material facts, the Court observed: "*We have already referred to section 83 relating to the contents of an election petition. The election petition shall contain a concise statement of material facts and also set forth full particulars of any corrupt practice. The material facts or particulars relating to any corrupt practice may be contained in a document and the election petitioner, without pleading the material facts or particulars of corrupt practice, may refer to the document. When such a reference is made in the election petition, a copy of the document must be supplied inasmuch as by making a reference to the document and without pleading its contents in the election petition, the document becomes incorporated in the election petition by reference. In other words, it forms an integral part of the election petition. Section 81(3) pro- vides for giving a true copy of the election petition. When a document forms an integral part of the election petition and a copy of such document is not furnished to the respondent along with a copy of the election petition, the copy of the election petition will not be a true copy within the meaning of section 81(3) and, as such, the court has to dismiss the election petition under section 86(1) for non- compliance with section 81(3).*"

47. Again in the case of Mulayam Singh Yadav (*supra*) where video cassettes contained videography with regard to practise of booth capturing etc. was not filed in original and copies were meant only for the contesting respondents, it was held to be an integral part of the election petition as videography details upon not discussed and referred to in the grounds and that having not been filed, the High Court had dismissed the election petition being not presented in the form it required under Section 81 Vide paragraphs 11, 12, 13 and 14, the Court observed thus:

11. Whether or not Schedule 14 is an integral part of the election petition does not depend on whether or not the draftsman of the election petition has so averred. It has to be decided objectively, taking into account all relevant facts and circumstances. Schedule 14 is one of 25 schedules which is, as a matter of fact, part of the bound election petition. In respect of each of these schedules, except Schedule 14, it is averred that it is a part of the election petition. Each of these schedules, other than Schedule 14, mentions, verifies and contains some paper or document which can be placed between the leaves of paper that comprise that schedule and be bound with the election petition. Schedule 14 mentions and verifies a video cassette which cannot be placed between two leaves and be bound with the election petition. This is the explanation for the difference in the manner in which the averments relating to Schedule 14 and the other schedules are made in the election petition. Clearly, the video cassette mentioned and verified in Schedule 14 is as much an integral part of the election petition as the papers and documents mentioned and verified in the other schedules. Further, that the video cassette mentioned and verified in Schedule 14 is a part of the election petition and was intended to be such is evident from the affidavit of the first respondent verifying the allegations of corrupt practice made in the election petition. Therein, the first respondent has verified the correctness of what is stated in para 83 of the election petition, which refers to Schedule 14 and which has been quoted above, and to Schedule 14 itself. Yet again, that the video cassette mentioned and verified in Schedule 14 is and was intended to be a part of the election petition is shown by the fact that 15 video cassettes which were copies of the video cassette mentioned and verified in Schedule 14 were filed in the High Court along with the election petition for being served upon the respondents thereto.

12. Ordinarily, what is shown upon the video cassette that is mentioned and verified in Schedule 14 would have been set out in the election petition and then that video cassette could have been said to be evidence of the allegations made in the election petition. As this election petition is drafted, there is no description of what is shown on this video cassette except to say that it shows booth-capturing, violence and arson. As to booth-capturing, there are particulars contained in the other schedules but even in that regard the later paragraphs of the election petition make reference to Schedule 14 so that even in regard to booth-capturing the particulars shown in the video cassette mentioned and verified in Schedule 14 are relied upon. So far as the allegations of violence and arson are concerned, there are no particulars in the election petition absent the video cassette mentioned and verified in Schedule 14.

13. We are, therefore, satisfied that the video cassette mentioned and verified in Schedule 14 is an integral part of the election petition and that it should have been filed in court along with copies thereof for service upon the respondents to the election petition. Whereas 15 copies thereof were filed for service upon the respondents, the video cassette itself was not filed. The election petition as filed was, therefore, not complete.

14. Section 81 contemplates the presentation of an election petition that is complete and satisfies the requirements of Section 83. An election petition that is not complete must, having due regard to the imperative mandate of Section 86, be dismissed. The present election petition must, therefore, be dismissed.

48. It is true that in the case of **A. Manju (supra)**, it was stated that appropriate affidavit if not filed, it would be only a technical defect and it would not be a ground to defeat the election petition at the very *threshold* and in this regard, the Constitution Bench of the Supreme Court in **Murarka Radhey Shyam Ram Kumar v. Roop Singh Rathore, AIR 1964 SC 1545** was referred to arrive at such conclusion vide paragraph 25 and 26 the Division Bench of the Supreme Court has observed thus:

25. We may take note of the Constitution Bench judgment of this Court in Murarka Radhey Shyam Ram Kumar v. Roop Singh Rathore [Murarka Radhey Shyam Ram Kumar v. Roop Singh Rathore, (1964) 3 SCR 573 : AIR 1964 SC 1545] which opined that the defect in verification of an affidavit cannot be a sufficient ground for dismissal of the petitioner's petition summarily and such an affidavit can be permitted to be filed later. This Constitution Bench judgment was also referred to in G.M. Siddeshwar case [G.M. Siddeshwar v. Prasanna Kumar, (2013) 4 SCC 776 : (2013) 2 SCC (Civ) 715] to come to a conclusion that non-compliance with the proviso to Section 83(1) of the RP Act was not fatal to the maintainability of an election petition and the defect could be remedied i.e. even in the absence of compliance, the petition would still be called an election petition. We cannot say that the High Court fell into an error while considering the election petition as a whole to come to the conclusion that the allegations of the appellant were not confined only to Section 33-A of the RP Act, but were larger in ambit as undue influence and improper acceptance of nomination of Respondent 1 were also pleaded as violation of the mandate under Sections 123 and 100 of the RP Act.

26. However, we are not persuaded to agree with the conclusion arrived at by the High Court that the non-submission of Form 25 would lead to the dismissal of the election petition. We say so because, in our view, the observations made in Ponnala Lakshmaiah case [Ponnala Lakshmaiah v. Kommuri Pratap Reddy, (2012) 7 SCC 788] which have received the imprimatur of the three-Judge Bench in G.M. Siddeshwar case [G.M. Siddeshwar v. Prasanna Kumar, (2013) 4 SCC 776 : (2013) 2 SCC (Civ) 715] appear not to have been appreciated in the correct perspective. In fact, G.M. Siddeshwar case [G.M. Siddeshwar v. Prasanna Kumar, (2013) 4 SCC 776 : (2013) 2 SCC (Civ) 715] has been cited by the learned Judge to dismiss the petition. If we look at the election petition, the prayer clause is followed by a verification. There is also a verifying affidavit in support of the election petition. Thus, factually it would not be appropriate to say that there is no affidavit in support of the petition, albeit not in Form 25. This was a curable defect and the learned Judge trying the election petition ought to have granted an opportunity to the appellant to file an affidavit in support of the petition in Form 25 in addition to the already existing affidavit filed with the election petition. In fact, a consideration of both the judgments of the Supreme Court referred to by the learned Judge i.e. Ponnala Lakshmaiah [Ponnala Lakshmaiah v. Kommuri Pratap Reddy, (2012) 7 SCC 788] as well as G.M. Siddeshwar [G.M. Siddeshwar v. Prasanna Kumar, (2013) 4 SCC 776 : (2013) 2 SCC (Civ) 715], ought to have resulted in a conclusion that the correct ratio in view of these facts was to permit the appellant to cure this defect by filing an affidavit in the prescribed form."

49. I have carefully gone through the entire judgment of the Supreme Court in the case of **A. Manju (supra)**, and have found that the division bench though has referred to the Constitution bench judgement in the case of **Murarka Radhey Shyam Ram Kumar (supra)** but did not refer to the judgment of the three judges bench in the case of **V. Narayanswamy (supra)** wherein Supreme Court had referred to and discussed the constitution bench judgment in the case of **Murarka Radhey Shyam Ram Kumar (supra)**. Since affidavit was not in a prescribed form as an inexperienced Oath Commissioner made a mistake in verification of portion of affidavit, the Court held that to be not such a defect which could be said to be fatal to the election petition and then the Court referred to the judgment of the Constitution

bench. Thus on facts the judgment in A. Manju (*supra*) is distinguishable and principles of law laid down in by the Supreme Court in the case of M. Karunanidhi (*supra*) and V. Narayanswamy (*supra*) and U.S. Sashidharan (*supra*) have yet not been diluted in subsequent judgments.

50. One of the arguments advanced by learned Senior Advocate appearing for the respondent Sri Manish Goyal was that ingredients as to the grounds questioning the election that are required to be furnished alongwith affidavit, in compliance to section 33-A is in the nature of a mere information. Whether such information is misleading or suppressing one so as to amount to an act of undue influence within the meaning of ‘corrupt practise’ would require a trial to be established after parties lead their respective evidence, and therefore, it would not be ground to dismiss the petition *in limine*.

51. In support of this above argument, reliance has been placed upon judgment of Supreme Court in the case of **Satish Ukey** (*supra*). Factually, I find that to be a case arising out of a criminal complaint lodged under Section 125A of the R.P. Act as details of two cases in which the cognizance had been taken against returned candidate were not mentioned despite returned candidate having due knowledge of the date of submission of nomination form. The Court in that circumstances rejected the complaint to be not maintainable. The District Judge had reversed the order of Magistrate which led to filing of appeal before the High Court. The High Court maintained the order of Magistrate and thus returned candidate, who had become Chief Minister preferred SLP before the Supreme Court. It is in background of that case, that Supreme Court had held that the details given in the affidavit were in response to the voter’s right to information as contemplated under Section 33 A of the R.P. Act. Thus the Court while dealing with information part of the provision interpreted it as a mere information as is required in terms of affidavit on a prescribed format. The Court returned a finding that it was a mere information and vide paragraph 24, 25 and 26 held thus:

24. A cumulative reading of Section 33-A of the 1951 Act and Rule 4-A of the 1961 Rules and Form 26 along with the letters dated 24-8-2012, 26-9-2012 and 26-4-2014, in our considered view, make it amply clear that the information to be furnished under Section 33-A of the 1951 Act includes not only information mentioned in clauses (i) and (ii) of Section 33-A(l), but also information, that the candidate is required to furnish, under the Act or the Rules made thereunder and such information should be furnished in Form 26, which includes information concerning cases in which a competent court has taken cognizance [Entry 5(ii) of Form 26]. This is apart from and in addition to cases in which charges have been framed for an offence punishable with imprisonment for two years or more or cases in which conviction has been recorded and sentence of imprisonment for a period of one year or more has been imposed [Entries 5(i) and 6 of Form 26 respectively].

25. In the light of the view that we have taken and in view of the clear averment made in the complaint to the effect that the first respondent had knowledge of the two cases against him which had not been mentioned in the affidavit filed by the first respondent along with his nomination papers, we unhesitatingly arrive at the conclusion that the order of the learned trial court upheld by the High Court by the impugned judgment and order dated 3-5-2018 [Devendra Gangadharrao Fadnavis v. Satish Ukey, 2018 SCC OnLine Bom 924 : 2018 Cri LJ 2582] is legally not tenable and the same deserves to be set aside which we hereby do. The complaint of the appellant will be considered afresh by the learned trial court from the stage where it was interdicted by the order dated 30-5-2016.

26. Our view as above is in consonance with a similar view expressed by this Court in para 75 of the Report in Krishnamoorthy v. Sivakumar [Krishnamoorthy v. Sivakumar, (2015) 3 SCC 467 : (2015) 2 SCC (Cri) 359] . Para 75 of the Report in Krishnamoorthy [Krishnamoorthy v. Sivakumar, (2015) 3 SCC 467 : (2015) 2 SCC (Cri) 359] reads as under: (SCC p. 514)

“75. On a perusal of the aforesaid format, it is clear as crystal that the details of certain categories of the offences in respect of which cognizance has been taken or charges have been framed must be given/furnished. This Rule is in consonance with Section 33-A of the 1951 Act. Section 33(1) envisages that information has to be given in accordance with the Rules. This is in addition to the information to be provided as per Sections 33(1)(i) and (ii). The affidavit that is required to be filed by the candidate stipulates mentioning of cases pending against the candidate in which charges have been framed by the Court for the offences punishable with imprisonment for two years or more and also the cases which are pending against him in which cognizance has been taken by the court other than the cases which have been mentioned in Clause (5)(i) of Form 26. Apart from the aforesaid, Clause (6) of Form 26 deals with conviction.”

52. In the case of **Adesh Tyagi v. Mahesh Sharma (2020) SCC Online All 589**, the Court proceeded to hold that a mere non compliance of Section 83(1) of the R.P. Act, 1951 would not result in dismissal of the election petition at the very outset and in forming such a view reliance has been placed upon an authority of Supreme Court in the case of **T. M. Jacob v C. Poulose and others, (1999) 4 SCC 274**.

53. In Adesh Tyagi's case the question was as to the true copy of the election petition and where Court held may not be 'exact copy' meant to be served upon the respondent. It was observed that when a reasonable person can understand a copy which is reasonably true to the original one, there can not be said any violation of Section 81(3). But here there is no such case. Hence the issue of concise statement of facts and material particulars, in my considered view, if petition lacks concise statement of facts and fails to detail material particulars in respect therefor, thus would lead a reasonable person to draw only one reference that election petitioner himself is not sure of the ground to question election and that he is confused about material particulars as to corrupt practise. Once one finds it to not be sure enough, than for this the concerned document becomes an integral part. A vague or confused statement of facts by itself cannot make an election petition maintainable, otherwise every election can be challenged in a routine manner. It is not common law suit but statutory remedy and so statute needs to be strictly followed. The learned Judge himself has referred to the judgment of Supreme Court in the case of F.A.Sapa that "*maintainability of an election petition, in the context will depend on whether schedule or annexure to petition constituting on integral part, it must satisfy the requirements of Section 81(3) and further in that behalf would be fatal.*"

54. In the case of **Harkirat Singh v. Amrinder Singh (2005) 13 SCC 511**, putting emphasis on the words and expression material facts which an election petition must contain with common details of particular, Supreme Court vide paragraph 51 and 52 has held thus

“51. A distinction between “material facts” and “particulars”, however, must not be overlooked. “Material facts” are primary or basic facts which must be pleaded by the plaintiff or by the defendant in support of the case set up by him either to prove his cause of action or defence. “Particulars”, on the other hand, are details in support of material facts pleaded by the party. They amplify, refine and embellish material facts by giving distinctive touch to the basic contours of a picture already drawn so as to make it full, more clear and more informative. “Particulars” thus ensure conduct of fair trial and would not take the opposite party by surprise.

52. All “material facts” must be pleaded by the party in support of the case set up by him. Since the object and purpose is to enable the opposite party to know the case he has to meet with, in the absence of pleading, a party cannot be allowed to lead evidence. Failure to state even a single material fact, hence, will entail dismissal of the suit or petition. Particulars, on the other hand, are the details of the case which is in the nature of evidence a party would be leading at the time of trial.”

55. In T.M.Jacob's case (*supra*) the Court had affirmed the judgment of the High Court that had rejected election petition filed on the ground of suppression of material facts *qua* two criminal cases; one in which appeal had been allowed and other one in which sentence imposed was of less than a year. The Court took this view that there could not be any influential regarding first criminal case and connection showed set aside and the other case being an award of sentence of less than one year, it would not have disqualified.

56. As I have already discussed above and has been held that in matters of election petition where election of returned candidate is being questioned then every provision of the election law/ statute has to be interpreted literally and strictly and petition filed questioning the election under such statute, has also to be seen strictly falling within four corners of the relevant provisions of law that require election petition to be presented in a definite form.

57. In the finding of part of the judgment in Ram Sukh, Supreme Court has held the provisions as contained Section 83 to be mandatory and if election petition is not presented in that form then it deserves to be dismissed. Vide paragraph 10,11,12,13,14 and 15 interpreting the provisions the Court held thus:

10. *Section 83, the pivotal provision for the present case, requires that: (a) the election petition must contain a concise statement of "material facts" on which the petitioner relies and (b) he should also set forth "full particulars" of any corrupt practices which the petitioner alleges. Proviso to clause (c) of sub-section (1) of Section 83 also provides that where the petitioner alleges any corrupt practice, the election petition shall also be accompanied by an affidavit in the prescribed form in support of the allegation of such corrupt practice and the particulars thereof. It is plain that the requirement of disclosure of "material facts" and "full particulars" as stipulated in the section is mandatory.*

11. *Section 86 mandates that where the election petition does not comply with the provisions of Section 81 or Section 82 or Section 117 of the Act, the High Court should dismiss the election petition. Section 87 which lays down the procedure required to be followed by the High Court while trying an election petition, requires that every election petition shall be tried, as nearly as may be, in accordance with the procedure applicable under the Code to the trial of the suits, subject of course to the provisions of the Act and of any requirement made thereunder.*

12. *It is evident that the controversy in this appeal lies in a narrow compass. It revolves around the ambit of Section 83 of the Act. The point for consideration is whether the election petition lacked "material facts" required to be stated in the election petition in terms of Section 83(1) of the Act and if so, could it be dismissed summarily without trial? As already noted, it is mandatory that all "material facts" are set out in an election petition and it is also trite that if material facts are not stated in the petition, the same is liable to be dismissed on that ground alone. Therefore, the question is as to whether the election petitioner had set out "material facts" in his petition?*

13. *The phrase "material facts" has neither been defined in the Act nor in the Code and, therefore, it has been understood by the courts in general terms to mean the entire bundle of facts which would constitute a complete cause of action. In other words, "material facts" are facts upon which the plaintiff's cause of action or the defendant's defence depends. (See *Mahadeorao Sukaji Shivankar v. Ramaratan Bapu*[(2004) 7 SCC 181].) Broadly speaking, all primary or basic facts which are necessary either to prove the cause of action by the plaintiff or defence by the defendant are "material facts". Material facts are facts which, if established, would give the petitioner the relief asked for. But again, what could be said to be material facts would depend upon the facts of each case and no rule of universal application can be laid down.*

14. *The requirement in an election petition as to the statement of material facts and the consequences of lack of such disclosure with reference to Sections 81, 83 and 86 of the Act came up for consideration before a three-Judge Bench of this Court in Samant N. Balkrishna v. George Fernandez [(1969) 3 SCC 238]. Speaking for the three-Judge Bench, M. Hidayatullah, C.J., inter alia, laid down that:*

- (i) *Section 83 of the Act is mandatory and requires first a concise statement of material facts and then the fullest possible particulars;*
- (ii) *omission of even a single material fact leads to an incomplete cause of action and statement of claim becomes bad;*
- (iii) *the function of particulars is to present in full a picture of the cause of action and to make the opposite party understand the case he will have to meet;*
- (iv) *material facts and particulars are distinct matters—material facts will mention statements of fact and particulars will set out the names of persons with date, time and place; and*
- (v) *in stating the material facts it will not do merely to quote the words of the section because then the efficacy of the material facts will be lost.*

15. *At this juncture, in order to appreciate the real object and purport of the phrase “material facts”, particularly with reference to election law, it would be appropriate to notice the distinction between the phrases “material facts” as appearing in clause (a) and “particulars” as appearing in clause (b) of sub-section (1) of Section 83. As stated above, “material facts” are primary or basic facts which have to be pleaded by the petitioner to prove his cause of action and by the defendant to prove his defence. “Particulars”, on the other hand, are details in support of the material facts, pleaded by the parties. They amplify, refine and embellish material facts by giving distinctive touch to the basic contours of a picture already drawn so as to make it full, more clear and more informative. Unlike “material facts” which provide the basic foundation on which the entire edifice of the election petition is built, “particulars” are to be stated to ensure that the opposite party is not taken by surprise.*

58. The ground 8C would only be entertainable if grounds 8 A, 8B, 8D are made out *prima facie*. Section 33 (A) of the R.P. Act was incorporated by amendment Act, 1972. It prescribed an affidavit on a format verifying information contained in Section 1 of Section 33 (1)(a). For ready reference, Section 33 A (1) of R.P. Act, reproduced hereunder:”

“33A. Right to information.—

(1) *A candidate shall, apart from any information which he is required to furnish, under this Act or the rules made thereunder, in his nomination paper delivered under sub-section (1) of section 33, also furnish the information as to whether—*

- (i) *he is accused of any offence punishable with imprisonment for two years or more in a pending case in which a charge has been framed by the court of competent jurisdiction;*
- (ii) *he has been convicted of an offence [other than any offence referred to in sub-section (1) or sub-section (2), or covered in sub- section (3), of section 8] and sentenced to imprisonment for one year or more.”*

59. Going by bare reading of aforesaid provisions two types of information an electorate has a right to know about the candidate:

(i). whether a candidate is an accused of a punishable offence for 2 years or more in a pending case in which charge has been framed by the Court of competent jurisdiction; and (ii) the other one is whether he has been convicted for an offence with an exception given therein.

60. Now when a candidate is required to furnish these two details, either he does not furnish it or furnishes it by suppressing material particulars or gives confusing particulars so as to unduly influence voters. Such details or particulars are to be mentioned in the ground by way of not only concise statement of fact but statement of particulars regarding such suppressed facts and if this is not done, the only statement of fact has been made then such affidavit wherein such particulars have been either suppressed or disclosed or is presented in confusing form, has to compulsorily accompany the election petition as integral part of election petition on the ground of corrupt practise.

61. Prior to 2002 only document on which affidavit was required to be furnished was form 25 but now since form 26 prescribed for an affidavit to contain statement of facts and regarding statement and particulars of criminal cases which are pending and also there in which a candidate has been convicted previously. Allegations regarding non proper disclosure of the same, amounted to a reference directly to the affidavit, and therefore, affidavit ought to have been filed alongwith an election petition. Even on the other grounds that are mentioned in 8B, which is also claimed to be a corrupt practise that returned candidate did not deliberately disclose the correct facts and suppressed material facts *qua* movable and immovable properties and other bank loans, I find that the grounds are abosluely silent as to what kind of misleading statement has been made or what kind of material facts have been suppressed. This also relates to nomination papers and affidavit filed in support thereof and since no nomination paper nor, affidavit has been filed, in my considered view these two documents being integral part of the election petition, election petition is liable to be rejected on this count also.

62. Coming to the argument advanced by learned counsel for election petitioner regarding presentation of election petition special provision relating to trial of election petition vide chapter XV-A of the High Court Rules, 1952 I find that definition clause or Rule 2 thereof provides for election petitions means "*an election petition presented under Section 81 of the Act*" and the Act vide definition Rule 2(i) means *representation of the People Act, 1951*". Now Rule 3 provides for presentation of election petition before Registrar and further provides that petition shall bear office report regarding court fee and compliance with Section 81, 82 and 83 and 117 of the Act. It also requires petitioner to file a list of documents whether in his possession or not upon which he realizes as evidence in support of his claim. The question, therefore, comes to same as to what is to be led in evidence and what is an integral part of petition to be filed to make it a complete presentation within meaning of Section 83 and 81 of the R.P. Act. The High Court has simply referred to the presentation of petition for the purposes of trial as contemplated under the R.P. Act, 1951. Rules are procedural but rules do not in any manner dilute the provisions of the R.P. Act, 1951. What it requires is that list of documents to be submitted alongwith election petition which petitioner wants to rely upon, whether in possession or not. The question is, mere mention of list of documents in any manner as prescribed would dilute the format of the election petition. Now if the format has not been prescribed and which naturally would not be there under High Court rules. While interprating Rule 3 of Chapter 15-a of the Rules of the High Court, 1952, one has to keep in mind that it talks of presentation only as per R.P. Act which is substantive law on the subject. When the Courtrefers to the presentation of petition under Section 81, and requires registry to submit a report as to compliance of Section 81, then it is very much clear that format prescribed under Section 81 has not been diluted at all. It is by way of abandoned precaution that Rule 3 further provides that whatever documents being relied upon, a list inthat regard may also be appended with petition. I do not see that provision as prescribed under Rule 2 of the High Court Rules to provide a list of document as an evidence to rely upon affidavit does in any manner dilute any proposition of law regarding presentation of election petition. Thus argument advanced

by learned counsel appearing for the respondents that election petition was presented as per rules of the Court, and therefore, even if documents that formed an integral part if were not filed, it would not lead to rejection of election petition is unsustainable. The election petitioner in the present case has annexed a schedule alongwith election petition as prescribed for and though has referred to the nomination paper and affidavit on form 26 but these two documents do accompany it, does not consist of that.

63. Thus the questions (b) and (c) are answered in affirmative and so against the election petitioner.

64. Since I have already held that election petition was not presented as it was not accompanied by nomination form and the affidavit, it would mean that it has not been presented in terms of Section 81 to hold trial under Section 86 of the R.P. Act.

65. In view of the above **first point** is decided against the election petitioner and in favour of returned candidate/ respondent no. 1.

66. Besides the above, on the point of affidavit of corrupt practise to be not meeting the requirements of law, I find that the affidavit refers to various paragraphs and form 26 regarding suppression of criminal antecedents and non disclosure of movable and immovable properties. Affidavit as such would have been good enough if the concise statement of fact and particulars of any corrupt practise as required under Section 83(1) (a) and (b) were disclosed in those grounds and paragraphs. Since I have held that in those paragraphs particularly regarding criminal antecedents, no particulars as such have been disclosed, the affidavit of corrupt practise automatically fall as it also does not refer to any particular corrupt practise. A mere reference to paragraphs which itself vague and sketchy, wouldnot make it sufficient enough to hold that to be legally acceptable affidavit within definition of law *qua* presentation of election petition.

67. Now coming to **second point**, I am reminded of a recent decision of the Supreme Court in the case of Kanimozhi Karunanidh (*supra*) in which proposition of law has been discussed relating to legal aspects herein involved in the present case and the Court having discussed various authorities proceeded to hold that if the election petition does not contain a concise statement of facts upon which petitioner relies and if such material facts also are not stated and particulars are not disclosed, then election petition would be liable to be dismissed not only under 86(i) of R.P. Act, 1951 also on the ground of Rule 11 (a) of Order VII of the Code of Civil Procedure, 1908.

68. After discussing a great deal, authorities of the Supreme Court delivered from time to time vide 28 the Court summarize the law as under:

“28. The legal position enunciated in afore-stated cases may be summed up as under:-

i. Section 83(1)(a) of RP Act, 1951 mandates that an Election petition shall contain a concise statement of material facts on which the petitioner relies. If material facts are not stated in an Election petition, the same is liable to be dismissed on that ground alone, as the case would be covered by Clause (a) of Rule 11 of Order 7 of the Code.

ii. The material facts must be such facts as would afford a basis for the allegations made in the petition and would constitute the cause of action, that is every fact which it would be necessary for the plaintiff/petitioner to prove, if traversed in order to support his right to the judgement of court. Omission of a single material fact would lead to an incomplete cause of action and the statement of plaint would become bad.

iii. Material facts mean the entire bundle of facts which would constitute a complete cause of action. Material facts would include positive statement of facts as also positive averment of a negative fact, if necessary.

iv. In order to get an election declared as void under Section 100(1)(d)(iv) of the RP Act, the Election petitioner must aver that on account of non-compliance with the provisions of the Constitution or of the Act or any rules or orders made under the Act, the result of the election, in so far as it concerned the returned candidate, was materially affected.

v. The Election petition is a serious matter and it cannot be treated lightly or in a fanciful manner nor is it given to a person who uses it as a handle for vexatious purpose.

vi. An Election petition can be summarily dismissed on the omission of a single material fact leading to an incomplete cause of action, or omission to contain a concise statement of material facts on which the petitioner relies for establishing a cause of action, in exercise of the powers under Clause (a) of Rule 11 of Order VII CPC read with the mandatory requirements enjoined by Section 83 of the RP Act.”

69. The court in that case was dealing with ground as contemplated under Section 100 (1) (d) (iv) of the R.P. Act to declare election of the returned candidate void. The bone of contention was, as the Court observed, with regard to certain financial issues relating to income tax dues of her spouse where she had mentioned ‘No’ and then she stated that her spouse had bank accounts in Singapore with deposits in dollar in further columns prescribed for under form 26 but status of income tax was not disclosed. The Court held election petition carried bald allegations as to the statement of facts. The concise statement of facts and setting-forth of particular was absolutely vague so much so that no *prima facie* view could be formed as to the allegations made so to hold that there was complete cause of action to maintain election petition. Vide 31, 32 and 33 the Court held :

“31. Mere bald and vague allegations without any basis would not be sufficient compliance of the requirement of stating material facts in the Election Petition. As well settled not only positive statement of facts, even a positive statement of negative fact is also required to be stated, as it would be a material fact constituting a cause of action. The material facts which are primary and basic facts have to be pleaded by the Election petitioner in support of the case set up by him to show his cause of action and omission of a single material fact would lead to an incomplete cause of action, entitling the returned candidate to pray for dismissal of Election petition under Order VII Rule 11(a) CPC read with Section 83(1)(a) of the RP Act.

32. It is also significant to note that an affidavit in Form 26 along with the nomination paper, is required to be furnished by the candidate as per Rule 4A of the said Rules read with Section 33 of the said Act. The Returning Officer is empowered either on the objections made to any nomination or on his own motion, to reject any nomination on the grounds mentioned in Section 36(2), including on the ground that there has been a failure to comply with any of the provisions of Section 33 of the Act. However, at the time of scrutiny of the nomination paper and the affidavit in the Form 26 furnished by the Appellant-returned candidate, neither any objection was raised, nor the Returning Officer had found any lapse or non-compliance of Section 33 or Rule 4A of the Rules. Assuming that the election petitioner did not have the opportunity to see the Form No. 26 filled in by the Appellant-returned candidate, when she submitted the same to the Returning Officer, and assuming that the Returning Officer had not properly scrutinized the nomination paper of the appellant, and assuming that the election petitioner had a right to question the same by filing the Election petition under Section 100(1)(d)(iv) of the said Act, then also there are no material facts stated in the petition constituting cause of action under Section 100(1)(d)(iv) of the RP Act. In absence of material facts constituting cause of action for filing Election petition under Section 100(1)(d)(iv) of the said Act, the Election petition is required to be dismissed under Order VII Rule 11(a) CPC read with Section 13(1)(a) of the RP Act.

33. As elaborately discussed earlier, Section 83(1)(a) of RP Act mandates that an Election petition shall contain a concise statement of material facts on which petitioner relies, and which facts constitute a cause of action. Such facts would include positive statement of facts as also positive averment of negative fact. Omission of a singular fact would lead to incomplete cause of action. So far as the present petition is concerned, there is no averment made as to how there was non-compliance with provisions of the Constitution or of RP Act or of the Rules or Order made thereunder and as to how such non-compliance had materially affected the result of the election, so as to attract the ground under Section 100(1)(d)(iv) of the RP Act, for declaring the election to be void. The omission to state such vital and basic facts has rendered the petition liable to be dismissed under rder VII, Rule 11(a) CPC read with Section 83(i)(a) of the RP Act, 1951.”

70. Applying the above principle to the facts stated in various paragraph in support of the ground on the aspects of movable and immovable property running from ground to paragraph 12,13,14,15,16 and 17 in the present election petition, I find that those details though have already been given, of returned candidate of statement of accounts etc. but in the absence of affidavit filed in support of nomination paper and the affidavit on form 26 as well, it could not be concluded even *prima facie* that there was any concealment of material facts and particular details indicating corrupt practise in question so as to hold the election petition disclosed a substantial ground to entertain it. Entire bundle of facts that have been stated in paragraphs of the petition, even if are examined very minutely with microscopic eyes, would only lead to a conclusion then that certain statements of facts made regarding criminal antecedents with certain particulars and details regarding immovable properties but what kind of concealment, what kind of misleading statement of suppressed material accounted to in the nomination papers are absolutely vague.

71. One of the arguments could be that, even if material facts are disclosed and material particulars are lacking to some extent then material facts that constitute cause of action would hold petition maintainable. This argument was also advanced by learned counsel appearing for the election petitioner in the case of petitioner V. Narayanswami (*supra*) as were referred to, which is reproduced hereunder:

“27. It is contended by Mr Bhandare that all the material facts have been stated in the election petition and that for lack of material particulars, the petition could not have been thrown out at the threshold. He said opportunity should have been given to the appellant to supply the material particulars. It is really a strange proposition to advance. Till the date of the impugned judgment, the appellant had persisted that the petition did not lack material particulars and that the verification was in accordance with the Code and the affidavit in support of the corrupt practice in the form prescribed. Admittedly, the petition lacked material particulars, the verification to the petition was not in accordance with the Code and the affidavit did not conform to the form prescribed. At the first opportunity, the respondent raised objection that the petition lacked both material facts and the material particulars and that the verification to the petition and the affidavit were not in accordance with law. This was repeated in the miscellaneous application (Original Application No. 298 of 1998). In the counter-affidavit and in the reply to the miscellaneous application, the appellant persisted in his stand and termed the objections raised by the respondent as irrelevant. It is not that the appellant did not have the opportunity to correct his mistake which he could have easily done in the rejoinder filed by him to the counter-affidavit of the respondent or even his reply to the miscellaneous application (OA No. 298 of 1998). He had every opportunity even at that stage to supply the material particulars which admittedly were lacking and also to amend the verification and to file the affidavit in the form prescribed but for reasons best known to him, he failed to do so. The existence of material facts, material particulars, correct verification and the affidavit are relevant and important when the petition is based on the allegation of corrupt practice and in the absence of those, the court has jurisdiction to dismiss the petition. The High Court has undoubtedly the power to permit amendment of the petition for supply of better material particulars and also to require amendment of the verification and filing of the required affidavit but there is no duty cast on the High Court to direct suo motu

the furnishing of better particulars and requiring amendment of the petition for the purpose of verification and filing of proper affidavit. In a matter of this kind the primary responsibility for furnishing full particulars of the alleged corrupt practices and to file a petition in full compliance with the provisions of law is on the petitioner. (See in this connection the Constitution Bench decision in Bhikaji Keshao Joshi v. Brijlal Nandlal Biyani [AIR 1955 SC 610 : (1955) 2 SCR 428] SCR at p. 144.)”

72. However, the Court in that case after going through every details discussed in the petition came to finally hold that petition not only lacked material facts but also lack material particulars with the effect that there was defective verification and affidavit was also not in the form prescribed order and hence confirmed the order of the High Court rejected the election petition vide paragraph 30 and 31 thus:

“30. It will thus be seen that the election petition not only lacked the material facts, it lacked material particulars, defective verification and the affidavit filed was not in the form prescribed. Moreover, the ingredients of corrupt practices, as defined in Section 123(1)(B) and 123(2) of the Act are also lacking. It is also not the case of the appellant that any MLA whom the appellant could not meet, received any gratification, as defined, whether as a motive or a reward for voting or refraining from voting, or there was any inducement or attempt to induce any such MLA to vote or refrain from voting. Also it is not the case of the appellant that any undue influence was exercised with the free exercise of any electoral right of any MLA which right, as noted above, has been defined in clause (d) of Section 79 of the Act. There is no allegation if any particular MLA was induced to vote or not to vote in a particular way because he was entertained or otherwise. The allegation is that the appellant himself could not meet the MLAs and he believed that if he had been given a chance to meet them he would have influenced their vote in his favour and against their party of affiliations. There is no allegation that the MLAs were prevented or influenced from freely exercising their electoral right. As stated earlier the appellant did not show as to why he could not meet the MLAs on 2.10.1997 when they were available in Pondicherry. The material fact must be that the appellant was prevented from meeting the MLAs which he did not allege and as to how he was so prevented would constitute material particulars.

31. The election petition read as a whole did not disclose any cause of action or triable issue. Considering the facts of the case and the principles of law applicable, the election petition was rightly dismissed by the High Court in limine”

73. In the considered view of the Court, therefore, in the total circumspect of the facts stated in the election petition, they do not constitute cause of action as such to maintain election petition. Thus **second point** stands answered in favour of returned candidate and against the election petitioner.

74. The grounds that have been raised as ground no. 8 A, 8B and 8D, in so far as they relate to suppression of material facts regarding criminal antecedents, in nomination papers and affidavit filed on the form 26, do not clarify specifically as to what kind of exact concealment of material particulars have taken place which necessitated election petitioner to question election on the ground of alleged corrupt practise. The material facts not only very sketchy but material particulars as to corrupt practise are not quite specific and are also not detailed therein in the relevant paragraphs. The nomination papers including affidavit referred to in the schedule as one of the documents are liable to be held as integral part of the election petition as proper construction of grounds raised relating to the statement facts and particulars would not be possible in the absence of these two documents and so the election petition, election petitioner is liable to be held as not maintainable as proper election petition and its presentation as such within meaning of Section 83 (1) 83 (a), and therefore, such election petition deserves rejection under Section 86(1) of R.P. Act on this count alone. There is no further clarity as to how ground 8D is made out.

75. In the present case as I have already discussed that no such definite particulars have been setforth in the election petition so as to form a view *qua* corrupt practise for such suppression or misleading facts and since such detailed information was required to be made on an affidavit prescribed then such an affidavit which has also been referred to in the schedule ought to have been filed alongwith election petition.

76. In view of above and having discussed various authorities on the point and since I have held that election petition not only lacks concise statement of material facts but has failed to set-forth material particulars which are mandatorily required under Section 83 (1)(a),(b) and both the documents, namely nomination form and affidavit mentioned in the scheduled appended to the election petition being an integral part of it and yet having not been filed, the instant election petition deserves rejection under Section 86(1) of the R.P. Act, 1951. Further averments being vague and confusing in totality in various paragraphs, petition also fails to disclose cause of action as such to maintain it. Accordingly, miscellaneous application filed under Section 86(1) of the R.P. Act, 1951 being no. 7 of 2022 moved by the returned candidate and miscellaneous application being no. 4 of 2022 filed under Order VII Rule 11(a) of the CPC are hereby allowed.

77. Election petition is dismissed.

78. Parties to bear their own cost.

Order Date: 22.12.2023.

Sanjeev

(Sd) Ajit Kumar, J.



सरकारी गज़्ट, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित

प्रयागराज, शनिवार, 12 अक्टूबर, 2024 ई० (आश्विन 20, 1946 शक संवत्)

भाग ८

सरकारी कागज-पत्र, दबाई हुई रुई की गांठों का विवरण-पत्र, जन्म-मरण के आंकड़े, रोगग्रस्त होने वालों और मरने वालों के आंकड़े, फसल और ऋतु सम्बन्धी रिपोर्ट, बाजार-भाव, सूचना, विज्ञापन इत्यादि।

उत्तर प्रदेश आवास एवं विकास परिषद

भूमि अर्जन अनुभाग, मुख्यालय

उ०प्र० आवास एवं विकास परिषद, अधिनियम-1965 (अधिनियम-1, सन् 1966) की धारा-32(1)

नोटिस

24 अगस्त, 2024 ई०

सं० 803/LAC-HQ-1(भाग-1)—उ०प्र० आवास एवं विकास परिषद, अधिनियम-1965 (अधिनियम-1, सन् 1966) की धारा-32(1) के अंतर्गत एतद्वारा यह विज्ञप्ति किया जाता है कि उपरोक्त अधिनियम की धारा-31(2) द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए “नई जेल रोड भूमि विकास एवं गृहस्थान योजना, मोहनलालगंज, लखनऊ” फेज-II“ नामक योजना की जो उक्त अधिनियम की धारा-28 के अधीन उ०प्र० गजट दिनांक 22 जुलाई, 2023 के भाग-आठ के पृष्ठ संख्या-337-338 पर प्रथम बार प्रकाशित हुयी थी और उक्त योजना हेतु परिषद अधिनियम की धारा-31(1) की स्वीकृति मा० परिषद, की 266वीं बैठक दिनांक 12 जून, 2024 में मद संख्या-266/25 पर प्रदान की गयी थी, उक्त योजना में समाविष्ट ग्राम मोहारीकला एवं शिठौलीखुर्द के सम्बन्ध में उ०प्र० राज्य सरकार के आवास एवं शहरी नियोजन अनुभाग-2 के पत्र संख्या-1107/आठ-2-24-01एच०बी०/2024, लखनऊ दिनांक 02 अगस्त, 2024 द्वारा उक्त योजना हेतु श्री राज्यपाल की स्वीकृति से अवगत कराया गया है।

उक्त योजना “नई जेल रोड भूमि विकास एवं गृहस्थान योजना, मोहनलालगंज, लखनऊ” फेज-II“ के अन्तर्गत ग्राम-मोहारीकला एवं शिठौलीखुर्द, परगना व तहसील-मोहनलालगंज, जिला-लखनऊ की अर्जन हेतु प्रस्तावित की जाने वाली भूमि का विवरण निम्नवत् है—

क्रम संख्या	ग्राम व परगना व तहसील व जिला का नाम	खसरा संख्या	कुल क्षेत्रफल	धारा-28 के अन्तर्गत अर्जन हेतु प्रस्तावित क्षेत्रफल	नियोजन समिति द्वारा समायोजित अर्जन मुक्त क्षेत्रफल	धारा-31 के अन्तर्गत प्रस्तावित क्षेत्रफल
1	2	3	4	5	6	7
			हेक्टेयर	हेक्टेयर	हेक्टेयर	हेक्टेयर
1	मोहारी कला	640	3.5400	0.2530	0	0.2530
1	सिठौली खुर्द	1	6.9520	6.9520	0	6.9520
2		3	7.7180	7.4660	0	7.4660
3		4	1.2650	1.2650	0	1.2650
4		5	0.8980	0.8980	0.0015	0.8965
5		6	0.8060	0.8060	0	0.8060
6		7	0.9760	0.9760	0	0.9760
7		8	0.3950	0.3950	0	0.3950
8		10	0.6320	0.4900	0	0.4900
9		14	0.7340	0.2880	0	0.2880
10		19	0.6960	0.2320	0	0.2320
11		20	0.2810	0.2810	0	0.2810
12		21	0.5030	0.5030	0	0.5030
13		22	0.3070	0.3070	0	0.3070
14		25	0.6260	0.3130	0.0112	0.3018
15		26	0.6080	0.6080	0	0.6080
16		84	0.0250	0.0250	0.0054	0.0196
17		85	0.0240	0.0240	0	0.0240
18		86	0.0250	0.0250	0	0.0250
19		87	0.2560	0.2560	0.0093	0.2467
20		88	0.3271	0.3271	0	0.3271
21		92	0.8110	0.8110	0	0.8110
योजना हेतु प्रस्तावित कुल क्षेत्रफल			28.4051	23.5011	0.0274	23.4737

डॉ० बलकार सिंह,

आवास आयुक्त।

U. P. HOUSING AND DEVELOPMENT BOARD

Land Acquisition Section, Head Quarters

Under Section 32 (1) of U.P. Housing and Development Board Act, 1965 (U.P. Act-1 of 1966)

NOTICE

August 24, 2024

No. 803/ LAC-HQ-1(भाग-1)—"Notification is hereby issued under Section 32(1) of the Uttar Pradesh Housing and Development Board Act, 1965 (Act-1, 1966) that, in exercise of the powers conferred by Section 31(2) of the said Act, the scheme named 'New Jail Road Bhoomi Vikas Evam Grihasthan Yojana, Mohanlalganj, Lucknow Phase-II, which was first published under Section 28 of the said Act in Part Eight on pages 337-338 of the Uttar Pradesh Gazette dated 22.07.2023, and for which approval under Section 31(1) of the Act was granted by the Honorable Board in its 266th meeting dated 12.06.2024 under item number 266/25 has been approved by the Governor as informed by the Uttar Pradesh State Government's Housing and Urban Planning Section-2 through letter number 1107/8-2-24-01HB/2024 Lucknow dated 02.08.2024, in relation to the Villages of Moharikala and Sithaulikurd included in the said scheme.

The details of the land proposed for acquisition under the 'New Jail Road Bhoomi Vikas Evam Grihasthan Yojana, Mohanlalganj, Lucknow phase-II in the Villages of Moharikala and Sithaulikurd, Pargana and Tehsil Mohanlalganj, District Lucknow are as follows-

Sl. No.	Village, Pargana, Tehsil & District	Gata No.	Total Area	Proposed Area in Section-28	Adjusted area recommended by the planning committee and the board meeting	Area of land to be acquired in section 31
1	2	3	4	5	6	7
			Hectare	Hectare	Hectare	Hectare
1	Mohari Kala	640	3.5400	0.2530	0	0.2530
1	Sithouli Kurd	1	6.9520	6.9520	0	6.9520
2		3	7.7180	7.4660	0	7.4660
3		4	1.2650	1.2650	0	1.2650
4		5	0.8980	0.8980	0.0015	0.8965
5		6	0.8060	0.8060	0	0.8060
6		7	0.9760	0.9760	0	0.9760
7		8	0.3950	0.3950	0	0.3950
8		10	0.6320	0.4900	0	0.4900
9		14	0.7340	0.2880	0	0.2880
10		19	0.6960	0.2320	0	0.2320
11		20	0.2810	0.2810	0	0.2810
12		21	0.5030	0.5030	0	0.5030

1	2	3	4	5	6	7
			Hectare	Hectare	Hectare	Hectare
13	Sithouli Kurd	22	0.3070	0.3070	0	0.3070
14		25	0.6260	0.3130	0.0112	0.3018
15		26	0.6080	0.6080	0	0.6080
16		84	0.0250	0.0250	0.0054	0.0196
17		85	0.0240	0.0240	0	0.0240
18		86	0.0250	0.0250	0	0.0250
19		87	0.2560	0.2560	0.0093	0.2467
20		88	0.3271	0.3271	0	0.3271
21		92	0.8110	0.8110	0	0.8110
Total Proposed Area for Scheme			28.4051	23.5011	0.0274	23.4737

Dr. Balkar Singh,
Housing Commissioner.

उत्तर प्रदेश आवास एवं विकास परिषद्
सबआर्डिनेट इंजीनियरिंग सर्विस रेगुलेशन्स 1973 (यथासंशोधित)

सूचना

16 अगस्त, 2024 ई०

सं० 1548/प्रशा०-एक 900/2016-उ०प्र० आवास एवं विकास परिषद् अधिनियम, 1965 की धारा-95 की उपधारा (1) के खण्ड (च) द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुये उ०प्र० आवास एवं विकास परिषद् सबआर्डिनेट इंजीनियरिंग सर्विस रेगुलेशन्स 1973 (यथासंशोधित) के भाग-4 के विनियम-8 में न्यूनतम आयु के सम्बन्ध में उल्लिखित नियमों में संशोधन किये जाने एवं शासनादेश संख्या-18/2/81-का-2-2012, दिनांक 6 जून, 2012 में उल्लिखित अधिकतम आयु सीमा 40 वर्ष किये जाने के उपरान्त उ०प्र० आवास एवं विकास परिषद् सबआर्डिनेट इंजीनियरिंग सर्विस रेगुलेशन्स 1973 (यथासंशोधित) के भाग-4 के विनियम-8 में निम्नलिखित संशोधन किये जाने के सम्बन्ध में मा० निदेशक मण्डल की 267वीं बैठक दिनांक 31 जुलाई, 2024 मद संख्या-267/9 पर प्रस्तुत किया गया। जिसे मा० निदेशक मण्डल द्वारा सर्वसम्मति से सम्यक् विचारोपरान्त अनुमोदित किया गया है।

वर्तमान विनियम

A candidate for recruitment to the Service must have attained the age of 18 years and must not have attained the age of 30 years on the 1st day of January next following the year in which the vacancies are notified under sub-regulation (2) of regulation 13 :

A candidate for recruitment to the Service must have attained the age of 18 years and must not have attained the age of 40 years on the 1st day of January of the year in which the vacancies are notified under sub-regulation (2) of regulation 13 :

2—अतः मा० निदेशक मण्डल द्वारा प्रदान किये अनुमोदन के क्रम में उ०प्र० आवास एवं विकास परिषद् इंजीनियरिंग सर्विस रेगुलेशन्स 1973 (यथासंशोधित) के भाग—4 के विनियम—8 में संशोधन के फलस्वरूप विनियमावली के शेष विनियम पूर्ववत् प्रभावी रहेंगे।

डा० बलकार सिंह,
आवास आयुक्त।

कार्यालय नगर पालिका परिषद्, लखीमपुर खीरी

01 अप्रैल, 2024 ई०

सं० ०१/ओ०एस०/एम०बी०एल०/२०२३-२४—नगरपालिका परिषद्, लखीमपुर ने नगरपालिका अधिनियम, 1916 की धारा 298 एवं उसमें दी गई उपधाराओं तथा शासन द्वारा समय-समय पर जारी शासनादेशों में दिये गये दिशा-निर्देशों के क्रम में निकाय की बोर्ड बैठक दिनांक 23 सितम्बर, 2023 के प्रस्ताव संख्या 5 द्वारा उपविधि बनाने हेतु अनुमोदनोपरान्त, ऑनसाइट स्वच्छता व्यवस्था के अपशिष्ट (फीकल स्लज, सेप्टेज और अपशिष्ट जल) के डी-स्लजिंग, परिवहन एवं ट्रीटमेंट तत्संबंधी और प्रासंगिक अथवा आनुषांगिक मामलों के लिए उपविधि तैयार की गयी, जिस का प्रकाशन दैनिक समाचार स्वतन्त्र भारत एवं एफोएशिआई संदेश लखीमपुर समाचार पत्र में नगर वासियों से 30 दिनों में आपत्ति एवं सुझाव प्राप्त करने हेतु दिनांक 24 जनवरी 2024 को कराया गया, जिस पर दिनांक 23 फरवरी, 2024 तक आपत्ति एवं सुझाव प्राप्त नहीं हुये। अतः ऑनसाइट स्वच्छता व्यवस्था के अपशिष्ट (फीकल स्लज, सेप्टेज और अपशिष्ट जल) के डी-स्लजिंग, परिवहन एवं ट्रीटमेंट तत्संबंधी और प्रासंगिक अथवा आनुषांगिक मामलों के लिए तैयार उपविधि को अन्तिम किया गया है। नियमावली सरकारी गजट में प्रकाशन की तिथि से प्रभावी मानी जायेगी।

फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्रबंधन उपविधि

अधिसूचना

उत्तर प्रदेश नगर पालिका अधिनियम, 1916 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, नगर पालिका परिषद्, लखीमपुर द्वारा घर/भवन/प्रतिष्ठान में ऑनसाइट सेनिटेशन सिस्टम (सेप्टिक टैंक/पिट/सोख्ता) के संग्रहण, ढुलाई और उससे जुड़े मामलों के लिए निम्नलिखित उपविधियां बनाई गयी हैं।

प्राधिकार—ये उपविधि निम्नलिखित प्रावधानों को लागू करने वाला सक्षम ढांचा है—

- (क) उत्तर प्रदेश राज्य सेप्टेज प्रबंधन नीति, 2019
- (ख) फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्रबंधन की राष्ट्रीय नीति, 2017
- (ग) सीपीएचईओ मैनुअल ऑन सीवरेज और फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्रबंधन 2013
- (घ) मॉडल निर्माण उपविधि, 2016 तथा अन्य लागू भवन उपविधि
- (ङ) प्रोहिबिशन ऑफ एम्लॉयमेंट ऐज मैनुअल स्कैवेंजर्स एंड देयर रिहैबिलिटेशन ऐक्ट-2013 आईएस कोड 2470 भाग-I और II, 1985 (1996 रीअफर्स्ट)-सेप्टिक टैंक संस्थापित करने के लिए कार्य व्यवहार संहिता
- (च) केंद्रीय कानून, नियम और विनियमन पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986
- (छ) जल (प्रदूषण पर रोक और नियंत्रण) अधिनियम, 1974

(ज) उत्तर प्रदेश के राजकीय कानून जैसे जल और स्वच्छता संबंधी, जैसे कि यू०पी० जल आपूर्ति एवं सीवरेज अधिनियम, 1975, उत्तर प्रदेश जल संस्थान जलापूर्ति एवं सीवरेज उपविधि, 2008 तथा अन्य कोई प्रासंगिक राजकीय कानून।

क्षेत्र (स्कोप)—ये उपविधि नगर पालिका परिषद लखीमपुर की प्रशासनिक सीमा के भीतर फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्रबंधन में संलग्न सभी हितधारकों पर लागू होते हैं, जिसमें सेप्टिक टैंक वाले घरों के मालिक एवं उपयोगकर्ता, सेप्टिक टैंक सफाई ऑपरेटर तथा निकाय के उपचार और निस्तारण में संलग्न जवाब देह एजेंसियां शामिल हैं। यह उपविधि सभी सार्वजनिक, निजी, आवासीय, वाणिज्यिक, संस्थागत, प्रस्तावित, नियोजित या निकाय नगर पालिका परिषद लखीमपुर भवनों पर लागू होगा।

अध्याय-I

प्रारंभिक

1— संक्षेप—शीर्षक, विस्तार और आरंभ—

(क) इन उपविधियों को नगर पालिका परिषद, लखीमपुर फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्रबंधन (FSSM) उपविधि, 2024 कहा जा सकता है।

(ख) ये गजट में प्रकाशित होने की तारीख से क्रियान्वित होंगे और निकाय की प्रशासकीय परीसीमा के अंदर लागू होंगी।

2— परिभाषा—

(1) “एक्सेस कवर” का अर्थ है निरीक्षण, सफाई तथा अन्य रखरखाव कार्य हेतु सेप्टिक टैंक/पिट में अंदर जाने के लिए छेद या रास्ता जिसको ढक्कन या आवरण से बंद किया हो,

(2) “अपेलेट बॉडी” निकाय, शहरी स्वच्छता समिति, और या, कोई अन्य संबंधित प्रासंगिक अधिकृत समिति के सदस्यों से मिल कर बना एक समूह है जिसका उद्देश्य उपविधियों से संबंधित किसी भी विवाद, अपील या मुद्दे का संबोधन करना है

(3) “फीकल स्लज या सेप्टेज का को-ट्रीटमेंट” उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसमें सीवेज उपचार सुविधा (एसटीपी) में, शहरों के सीवर के जरिए से ले जाने वाले घरेलू सीवेज के उपचार के अलावा, विभिन्न ऑन-साइट स्वच्छता प्रणालियों के फीकल स्लज और सेप्टेज (एफएसएस) का भी उपचार किया जाता है,

(4) “को-ट्रीटमेंट फैसिलिटी” का तात्पर्य है ऐसा सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट जिसमें फिकल स्लज के उपचार के लिए पर्याप्त प्रावधान उपलब्ध हो,

(5) “विकेंट्रीकृत अपशिष्ट जल उपचार (DWWT) प्रणाली” का तात्पर्य है ऐसी पद्धति से है जिसमें निजी आवासों, आवासीय संकुलों, एकल समुदायों, उद्योगों, संस्थानों या उत्पादन स्थल के निकट अपशिष्ट जल का संग्रहण, उपचार किया जाता है और निस्तारण/दुबारा इस्तेमाल योग्य बनाया जाता है। ये प्रणाली अपशिष्ट जल के तरल और ठोस दोनों घटकों के लिए प्रयुक्त होते हैं,

(6) “नियुक्त अधिकारी” निकाय का ऐसा अधिकारी जिसे अधिशासी अधिकारी द्वारा लाइसेंस जारी करने के लिए अथवा उसे सौंपे गए किसी अन्य कार्य करने के लिए अधिकृत किया गया हो,

(7) “‘डिस्लिंग’” का तात्पर्य है लाइसेंसधारी ऑपरेटर अथवा निकाय के प्रशिक्षित सफाई कर्मचारियों द्वारा सेप्टिक टैंक/पिट से फीकल स्लज एवं सेप्टेज निकालने की प्रक्रिया,

(8) “‘निस्तारण’” का तात्पर्य है फीकल स्लज एवं सेप्टेज का अधिसूचित स्थान तक परिवहन एवं निर्वहन,

(9) “‘एफ्लूयंट’” का तात्पर्य है सेप्टिक टैंक से निकलने वाला अधिप्लावी (द्रव),

(10) “‘फीकल स्लज एवं सेप्टेज’” का तात्पर्य है सेप्टिक टैंक अथवा ऑनसाइट सेनिटेशन प्रणालियों में जमी हुई या नीचे बैठी हुई सामग्री,

(11) “‘फीकल स्लज ट्रीटमेंट प्लांट (FSTP)’” का तात्पर्य है सुरक्षित निस्तारण और दुबारा इस्तेमाल के निर्धारित मानदंड के अनुदार ठोस और तरल घटकों को हटाने वला स्वतंत्र फीकल स्लज एवं सेप्टेज उपचार संयंत्र,

(12) “‘ग्रे वाटर’” का तात्पर्य है घरेलू अपशिष्ट जल से है जिसमें मानव मल नहीं होता। यह घर की सफाई से निकला पानी, रसोई और स्नानघर का पानी हो सकता है;

(13) “‘होस्ट यूएलबी’” का तात्पर्य है वह निकाय जो उपचार संयंत्र के संचालन और रखरखाव के लिए जिम्मेदार होता है और जो संयंत्र में निकटवर्ती निकाय के फीकल स्लज एवं सेप्टेज को उपचार की अनुमति देता है। अपनी अधिकतम क्षमता को हासिल करने तक होस्ट निकाय होस्ट बना रहेगा;

(14) “‘इनसैनिटरी लेट्रिन्स’” का तात्पर्य उन शौचालयों हैं जहां रात की मिट्टी (मल-कीचड़) को किसी मानव या जानवरों द्वारा ढोया या हटाया जाता है, तथा मल कीचड़ को खुली नालियों या गड्ढों में डाल दिया जाता है;

(15) “‘लाइसेंस’” का अर्थ है किसी व्यक्ति को दी गई लिखित अनुमति है, जिसकी मंशा फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्रबंधन सेवाओं को पूरा करना होती है, जिसमें उद्देश्य, समय अवधि, नाम, पता और मार्ग आदि का उल्लेख निकाय के अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता के हस्ताक्षर के अंतर्गत किया जाता है;

(16) “‘लाइसेंस प्राप्त ऑपरेटर’” (लाइसेंसधारी) का अर्थ है ऐसा व्यक्ति जिसे फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्रबंधन सेवाएं प्रदान करने हेतु निकाय द्वारा पंजीकृत किया गया हो;

(17) “‘अधिसूचित स्थान’” का अर्थ होता है निकाय द्वारा परिभाषित और निर्धारित फीकल स्लज एवं सेप्टेज की आपूर्ति और निस्तारण का स्थान;

(18) “‘ऑनसाइट सेनिटेशन सिस्टम (ओएसएस)’” ऐसी स्वच्छता प्रणाली है जो पूरी तरह से निजी/व्यावसायिक/सरकारी आवास और उसके आस-पास के भूखंड पर स्थित होता;

(19) “‘ऑपरेटर’” का तात्पर्य ऐसे व्यक्ति से है जो फीकल स्लज एवं सेप्टेज निकालने और उसके परिवहन के व्यवसाय में संलग्न है;

(20) “‘मालिक’” का अर्थ है वह व्यक्ति जो निकाय की सीमा के भीतर स्थित किसी भवन या उसके किसी हिस्से का मालिक हो;

(21) “‘व्यक्ति’” का तात्पर्य एक ऐसे व्यक्ति से है एक एजेंसी, एक ट्रस्ट, एक समाज, एक फर्म या एक कंपनी को संदर्भित करता है प्रासंगिक कानूनों के तहत निगमित कंपनी, व्यक्तियों का एक संघ या व्यक्ति का एक निकाय चाहे निगमित हो या नहीं;

(22) “सैनिटरी लेट्रिन्स” का अर्थ होगा सेप्टिक टैंक अथवा कोई ओएसएस अथवा भूमिगत सीवरेज प्रणाली से जुड़े शौचालय और मूत्रालय के प्रकार और बनावट जो मल (अपचित मलमूत्र) के सुरक्षित परिरोधन और निस्तारण को सुनिश्चित करता हो, जिनमें से प्रत्येक का निर्माण निकाय द्वारा जारी किए गए डिजाइन विनिर्देश और दिशानिर्देश के अनुरूप नियमानुसार किया गया हो;

(23) “सेप्टिक टैंक” भूमिगत निर्मित टैंक है जो आंशिक रूप से ठोस जमाव और अवायवीय पाचन के संयोजन द्वारा आंशिक रूप से फीकल स्लज एवं सेप्टेज का उपचार करता है, जिसका निर्माण आईएस कोड 2470 के डिजाइन विनिर्देश या निकाय द्वारा जारी दिशानिर्देशों के अनुसार किया गया है।

(24) “शेड्यूल्ड डीस्लजिंग” का अर्थ है केंद्रीय लोक स्वास्थ्य एवं पर्यावरण इंजीनियरिंग संगठन (सीपीएचईईओ) की अनुशंसाओं के आधार पर 2-3 वर्षों के अंतराल पर ओएसएस को नियमित रूप से खाली कराने की प्रक्रिया।

(25) “सेप्टेज” का अर्थ है अच्छी तरह डिजायन किए हुए सेप्टिक टैंक से निकलने वाला फीकल स्लज एवं सेप्टेज।

(26) “सीवेज” का अर्थ है ब्लैक और ग्रे पानी का मिश्रण है जिसे सीवरों के माध्यम से प्रवाहित किया जाता है। इसे वेस्ट वॉटर/यूज्ड वॉटर भी कहा जाता है।

(27) “सीवर” वो प्रणाली (सीवर लाइन/पाइप लाइन) जिसके माध्यम से समुदाय के अपशिष्ट जल को बहाया जाता है।

(28) “सीवेज पम्पिंग स्टेशन” का अर्थ होता है शहर में सीवर नेटवर्क के पंप-हाउस का भंडारण और संग्रह कक्ष, जहाँ से सीवेज यानी मल जल या अपवाह को निर्दिष्ट स्थान पर पंप करके भेजा जाता है।

(29) “सीवेज उपचार संयंत्र” का अर्थ उस स्थान से है जहाँ सुरक्षित निस्तारण और दुबारा उपयोग के लिए निर्धारित मानकों के अनुसार मल जल का उपचार किया जाता है।

(30) “निकाय के प्रशिक्षित सफाई कर्मी” का अर्थ है निकाय के कर्मचारी या निकाय लाइसेंसी वैक्यूम टैंकर का इस्तेमाल कर फीकल स्लज एवं सेप्टेज की सफाई करने या उसे खाली करने और ढुलाई के उद्देश्य के लिए निकाय द्वारा नियुक्त और प्रशिक्षित अनुबंधित अथवा काम पर लिए गए कर्मचारी।

(31) “परिवहन या ढुलाई” का अर्थ है लाइसेंसधारी वाहन के माध्यम से (एफएसएस) निकालने के स्थान से निर्दिष्ट निस्तारण स्थल तक फीकल स्लज एवं सेप्टेज की सुरक्षित ढुलाई।

(32) “उपचार” का अर्थ है प्रदूषण को कम करने या रोकने के लिए एफएसएस/मल जल/अपशिष्ट जल के भौतिक, रासायनिक या जैविक और रेडियोलॉजिकल विशेषता या संरचना को बदलने के लिए तैयार की गई कोई वैज्ञानिक पद्धति या प्रक्रिया।

(33) “उपचार सुविधा” का अर्थ होगा निकाय में विनिर्देशों और दिशानिर्देशों के आधार पर बने अधिसूचित फीकल स्लज उपचार और निस्तारण हेतु निर्मित स्थल

(34) “यूएलबी क्लस्टर” का अर्थ होगा होस्ट निकाय और इसके निकटस्थ यूएलबी/ग्राम पंचायत, जिन्हें शहर में स्थित उपचार संयंत्र में एफएस के सुरक्षित निस्तारण के लिए होस्ट निकाय के साथ एमओयू की आवश्यकता होगी।

(35) “निकाय पंजीकृत (वैक्यूम) टैंक” का अर्थ ऐसे वैक्यूम टैंकर से है, जिसे निर्दिष्ट उद्देश्य पूरा करने हेतु निकाय द्वारा विधिवत पंजीकृत कराया गया हो, जिसे निकाय द्वारा निकाय क्षेत्र में फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्रबंधन सेवाएं प्रदान करने हेतु निकाय द्वारा पंजीकृत किया गया हो।

(36) “निर्वात टैंकर (वैक्यूम टैंकर)” ऐसा वाहन होता है जिसमें एक पंप और टंकी होती है, जिसे साइट पर स्वच्छता प्रणालियों से फीकल स्लज एवं सेप्टेज को वैक्यूम की मदद से खींचने के लिए बनाया गया है। इन वाहनों का उपयोग सेप्टिक टैंक से निकाले फीकल स्लज एवं सेप्टेज के परिवहन के लिए भी किया जाता है।

(37) “अपशिष्ट जल (वेस्ट वॉटर)/यूज्ड वॉटर” का अर्थ घरेलू/व्यावसायिक अथवा अन्य मानवीय गतिविधियों से निकले तरल प्रवाह से है, जिसमें शौचालय, रसोई और सफाई कार्य से निकला पानी, लेकिन इसमें विनिर्माण और औद्योगिक गतिविधियों से निकलने वाला पानी शामिल नहीं है। आमतौर पर इस तरह के प्रवाह को वर्षा जल नालियों के माध्यम से बहाया है, इस प्रकार इसमें तूफानी जल भी शामिल होता है।

(38) “कर्मी” का अर्थ है लाइसेंसधारी ऑपरेटर द्वारा फीकल स्लज एवं सेप्टेज की फीकल स्लज निकासी, ढुलाई और निस्तारण के लिए नियुक्त व्यक्ति।

सभी अन्य शब्द और अभिव्यक्ति जो इन उपविधियों में प्रयुक्त हुए हैं और जो इन उपविधियों में परिभाषित नहीं किए गए हैं और जो यहां ऊपर भी परिभाषित नहीं हैं लेकिन जिन्हें अधिनियम में अथवा वर्तमान में लागू किसी अन्य कानून में परिभाषित किया गया है उनका अर्थ वही होगा जो अधिनियम या कानून के तहत क्रमशः उन्हें प्रदान किया गया है और उसके अभाव में उनका अर्थ वही होगा जो जलापूर्ति और मल जल उपचार/निस्तारण उद्योग में आमतौर पर समझा जाता है।

अध्याय-II

अपशिष्ट जल का प्रबंधन और निस्तारण

3— परिसर में अपशिष्ट जल का प्रबंधन और निस्तारण— निकाय में प्रत्येक संपत्ति के मालिक/अधिग्राही (जिसमें अन्य के अलावा शामिल है आवासीय और व्यावसायिक, प्रस्तावित या वर्तमान) यह सुनिश्चित करने के लिए उत्तरदायी होंगे कि उनके परिसर से अपशिष्ट जल को निम्नलिखित तरीके से किसी भी या किसी के संयोजन के माध्यम से उपचार या निस्तारण किया जाता है, अर्थात्;

(क) यदि घर की सीमा से 30 मीटर की दूरी या उतनी दूरी जितनी दूर से सीवर कनेक्शन घर तक आ सकता हो, या घर का मालिक कनेक्शन लेने के लिए कोई शुल्क अथवा कोई और जरूरत के अनुसार प्रक्रिया पूर्ण करा कर करे।

(ख) अपशिष्ट जल को एक निकाय अनुमोदित समुदाय या स्थानीय क्षेत्र उपचार सुविधा तक पहुंचाया जाता है।

(ग) यदि संपत्ति के 30 मीटर में कोई सीवर नहीं है, तो मालिक को यह सुनिश्चित करना होगा कि अपशिष्ट जल को साइट की उपचार प्रणाली में ले जाया जाए, जिसमें सेप्टिक टैंक या ट्रिवन-पिट या सोक-पिट या साइट पर स्थित आईएस कोड 2470 भाग 1 और 2 के अनुसार निर्मित अन्य प्रणाली शामिल हो सकती हैं। (देखें परिशिष्ट-1)।

(घ) वे परिपत्तियाँ जो प्रतिदिन x किलो लीटर से अधिक अपशिष्ट जल उत्पन्न करती हैं और उनके परिसर के भीतर xx वर्ग मीटर से अधिक खुला क्षेत्र है, तो उसमें एक विकेन्ट्रीकृत अपशिष्ट जल उपचार प्रणाली स्थापित की जाए

ताकि संपत्ति में एकत्र अपशिष्ट जल का उपचार किया जा सके। संपत्ति के मालिक द्वारा बागवानी/फलशिंग के लिए उपचारित अपशिष्ट जल का पुनः उपयोग किया जाए ताकि ताजे पानी पर निर्भरता कम हो।

अध्याय-III

ऑनसाइट स्वच्छता प्रणालियाँ

4— मालिक या अभिग्राही के कर्तृतव्य और अनुपालन— निकाय के दायरे में स्थित किसी भवन या उसके हिस्से का मालिक या अभिग्राही, जैसा भी मामला हो, इन उपविधियों के लागू होने की तारीख से निम्नलिखित दायित्वों को पूरा करने के लिए जिम्मेदार होंगे;

उपविधियों के अनुसार प्राधिकार द्वारा जारी सूचना में निर्दिष्ट समय के भीतर वह ऐसे भवन में इंसेनिटरी लेट्रिन्स उपयोग को बंद कर देंगे और निकटवर्ती सामान्य नालियों या खुले भूखंड या जल निकायों के सभी निर्गम को भी बंद कर देंगे तथा अपने स्वामित्व वाले या अपने उपयोग किए जाने वाले भवनों में केवल सेनिटरी लेट्रिन्स का निर्माण, संचालन और उनका रखरखाव करेंगे।

5— ओएसएस का डिजाइन, निर्माण और रखरखाव—

(क) ओएसएस का डिजाइन, निर्माण और उनकी स्थापना 'आईएस कोड 2470 भाग 1 और 2' के प्रावधानों के अनुसार किया जाएगा, या इसके समय समय पर किए गए संशोधित प्रावधान अथवा नगरपालिका परिषद् लखीमपुर या राज्य सरकार या केंद्र सरकार द्वारा जारी किसी अन्य स्वीकृत उपयुक्त अभियांत्रिकी कार्य सहित द्वारा संशोधित किया गया हो।

(ख) ओएसएस से जुड़ी संपत्ति के मालिक/निवासी ऐसे ओएसएस से निकलने वाले फीकल स्लज के अनुरक्षण, रखरखाव और सुरक्षित निस्तारण के लिए जिम्मेदार होंगे।

(ग) परिसर का मालिक नगरपालिका परिषद् लखीमपुर द्वारा निर्धारित लागत के भुगतान पर नियमित आधार पर (प्रत्येक 2-3 वर्ष में) फीकल स्लज साफ करने का काम करेगा। (अथवा जैसा कि परिशिष्ट 2 में सुझाया गया है)।

(घ) परिसर का मालिक सुनिश्चित करेगा कि कंटेनमेंट संयंत्र के खराब या दोषपूर्ण निर्माण के कारण फीकल स्लज के खुली जगहों में या नाली में गिरने से पर्यावरण प्रदूषित नहीं हो।

(ङ) परिसर के मालिक को यह सुनिश्चित करना होगा कि सेप्टिक टैंक को लाइसेंस प्राप्त ऑपरेटर या नगरपालिका परिषद् लखीमपुर के प्रशिक्षित स्वच्छता कर्मियों द्वारा पर्याप्त सुरक्षा उपायों के साथ यांत्रिक रूप से साफ किया जाता है और हाथ से सफाई ना हो।

(च) नियमों के पालन के लिए नगरपालिका परिषद् लखीमपुर या उसके अधिकृत प्रतिनिधि को ही परिसर का निरीक्षण करने का अधिकार है। नगरपालिका परिषद् लखीमपुर समय-सीमा के भीतर अपने खर्च पर अपशिष्ट जल प्रबंधन और निस्तारण से संबंधित नियम उल्लंघन की स्थिति में सुधार/संशोधन के लिए परिसर के मालिक के लिए चेतावनी जारी कर सकता है।

(छ) नगरपालिका परिषद् लखीमपुर अपने विवेक पर, गैर-अनुपालन प्रणालियों के रेट्रोफिटिंग/सुधार के लिए संपत्ति मालिकों को प्रोत्साहन प्रदान कर सकता है और वैकल्पिक प्रणालियों का सुझाव देने के लिए तकनीकी विशेषज्ञों को शामिल कर सकता है।

अध्याय-IV

फीकल स्लज एवं सेप्टेज के संग्रहण और ढुलाई के लिए लाइसेंस और पंजीकरण

6— निकाय द्वारा जारी किया जाने वाला लाइसेंस—

(क) नगरपालिका परिषद् लखीमपुर वर्तमान में अपनी प्रशासनिक सीमाओं में फीकल स्लज एवं सेप्टेज निकालने की सेवाएँ प्रदान करने वाले निजी ऑपरेटरों के स्वामित्व वाले या किराए पर लिए गए वैक्यूम टैंकरों को पंजीकृत करेगा।

(ख) नगरपालिका परिषद् लखीमपुर अपने कर्मियों सहित ऑपरेटरों के लिए आईईसी और क्षमता निर्माण उपयुक्त तरीके से इस्तेमाल करने के लिए जागरूक और प्रशिक्षित किया जाएगा। यह प्रशिक्षण पंजीकरण की तिथि के 1 महीने के भीतर किया जाएगा।

(ग) जब ऑपरेटर को लगे कि वह लाइसेंसिंग के मानदंडों के अनुपालन में सफल है, तो वह इन उपविधियों के फॉर्म 1 (परिशिष्ट-4) की मदद से इसके लिए आवेदन कर सकता है। इसे प्रशिक्षण के पूरा होने के 2 महीने से अधिक नहीं बढ़ाया जाएगा।

(घ) नगरपालिका परिषद् लखीमपुर ऑपरेटर द्वारा अधिसूचित स्थानों पर फीकल स्लज निकालने और फीकल स्लज एवं सेप्टेज की ढुलाई के लिए लाइसेंस जारी करेगा।

(ङ) इन विनियमों के फॉर्म 2 (परिशिष्ट-5) में निर्धारित प्रारूप के अनुसार लाइसेंस जारी किया जाएगा, और यदि इसे पहले रद्द नहीं किया जाता है तो जारी होने की तिथि से एक वर्ष के लिए वैध होगा, और अवधि समाप्त होने पर निर्धारित शुल्क का भुगतान करने पर लाइसेंसधारी ऑपरेटर द्वारा नियमों और शर्तों की पूर्ति के अधीन नवीकरणीय होगा।

7— लाइसेंस जारी करने की शर्तें—

(क) लाइसेंस हासिल करने के पात्र आवेदक का अर्थ इन उपविधियों के खंड 2 (21) में परिभाषित "व्यक्ति" से होगा।

(ख) आवेदक को उचित सक्षन/वैक्यूम और डिस्चार्जिंग व्यवस्था के साथ रिसाव-मुक्त, गंध और छिलकाव रहित परिवहन वाहन का मालिक होना चाहिए या ऐसा वाहन उसे किराए पर लेना चाहिए।

(ग) (शहर का नाम) में परिचालन के लिए वाहन का परिवहन विभाग द्वारा जारी वैध परमिट या पंजीकरण प्रमाणपत्र होगा।

(घ) आवेदक अपने वैक्यूम टैंकर को नगरपालिका परिषद् लखीमपुर के साथ पंजीकृत करेगा।

(ङ) आवेदक का यह उत्तरदायित्व होगा कि उसके स्वामित्व वाले/किराए पर लिए गए वैक्यूम टैंकर इन विनियमों के खंड 16 में दिए गए मानदंडों को पूरा करते हैं।

(च) आवेदक का यह भी उत्तरदायित्व होगा कि नगरपालिका परिषद् लखीमपुर या उसके द्वारा किराए पर ली गई एजेंसी द्वारा इस उद्देश्य के लिए नियुक्त कर्मी पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित हैं।

(छ) आवेदक द्वारा कर्मियों को सुरक्षा उपस्कर और अन्य सुरक्षात्मक उपकरणों से लैस रखा जाएगा, जो कि सुरक्षित रूप से फीकल स्लज निकालने, उसकी ढुलाई करने और अधिसूचित स्थानों पर फीकल स्लज एवं सेटेज का निस्तारण करने के लिए आवश्यक हैं। जरूरी पीपीई इस उपनिविधि के परिशिष्ट-3 में दी गई सूची के अनुसार होगा।

8— लाइसेंस के लिए आवेदन— फीकल स्लज एवं सेटेज निकालने, परिवहन और निपटान हेतु लाइसेंस प्राप्त करने के लिए आवेदन एफएसएस का निर्धारित प्रारूप में प्रस्तुत किया जाएगा, जो इन उपनिविधियों के फॉर्म 1 के रूप में संलग्न है, जिसमें नियमों और शर्तों सहित ऐसे दस्तावेजों के साथ जैसा कि निकाय के नामित अधिकारी (परिशिष्ट-4 देखें) द्वारा निर्धारित किया गया हो। नगरपालिका परिषद् लखीमपुर द्वारा सत्यापन एवं प्रशिक्षण के बाद ही फीकल स्लज एवं सेटेज का संग्रहण, परिवहन एवं निपटन का लाइसेंस ऑपरेटर को दिया जायेगा (फॉर्म-2, परिशिष्ट-5)।

9— लाइसेंस के लिए आवेदन करने हेतु आमंत्रण— लाइसेंस के लिए आवेदन करने हेतु नगरपालिका परिषद् लखीमपुर द्वारा संभावित आवेदकों को आमंत्रित करते हुए समय-समय पर अपनी वेबसाइट पर और प्रमुख समाचार पत्रों तथा अन्य प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से व्यापक विज्ञापन दिया जाएगा।

10— लाइसेंस के लिए पंजीकरण शुल्क— नए निजी ऑपरेटरों (फीकल स्लज एवं सेटेज निकालने वाला) के लिए लाइसेंस प्रदान करने हेतु पंजीकरण पूरा करने के लिए समय-समय पर नगरपालिका परिषद् लखीमपुर द्वारा निर्धारित पंजीकरण शुल्क (10.1 देखें) लिया जा सकता है। यह शुल्क लौटाया नहीं जाएगा और इसका भुगतान इलेक्ट्रॉनिक या नगद स्वरूप में किया जा सकता है।

10.1— पंजीकरण के शुल्क और वैधता—

(क) ऑपरेटर के रूप में नए निजी ऑपरेटरों को पंजीकृत कराने हेतु पंजीकरण शुल्क रु० 1,000/-

(ख) पंजीकरण की वैधता पंजीकृत निजी ऑपरेटर लाइसेंस नवीनीकरण शुल्क जमा करके अधिकतम 1 वर्ष (1 अप्रैल से 31 मार्च तक) तक शहर को अपनी सेवा दे सकता है। यदि निजी ऑपरेटर लाइसेंस नवीनीकरण करने में विफल रहता है तो उसका पंजीकरण स्वतः रद्द हो जाएगा और यदि वह शहर की सीमाओं में फीकल स्लज हटाने वाली सेवाओं को फिर से शुरू करना चाहता है तो उसे पंजीकरण प्रक्रिया पूरी करनी होगी।

(ग) लाइसेंस नवीनीकरण शुल्क रु० 5,000/-

11— लाइसेसधारी ऑपरेटर का विज्ञापन— नगरपालिका परिषद् लखीमपुर द्वारा समय-समय पर अपनी वेबसाइट के साथ-साथ प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से लाइसेसधारी ऑपरेटर का व्यापक विज्ञापन दिया जाएगा।

12— जागरूकता अभियान— इन उपनिविधियों के बारे में जागरूक करने के साथ-साथ फीकल स्लज एवं सेटेज की सफाई, ढुलाई और निस्तारण हेतु नगरपालिका परिषद् लखीमपुर द्वारा लोगों को केवल लाइसेसधारी ऑपरेटर को शामिल करने की आवश्यकता के बारे में जागरूक बनाने का अभियान चलाए जाएगा।

अध्याय-V

फीकल स्लज एवं सेटेज का निष्कासन/संग्रहण (डीस्लजिंग) और परिवहन (ढुलाई)

13— संपत्ति के मालिक या अभिग्राही द्वारा केवल लाइसेसधारी ऑपरेटर को काम पर रखा जाएगा—

(क) भवन के प्रत्येक मालिक/अभिग्राही का यह दायित्व होगा कि वह फीकल स्लज एवं सेप्टेज निकासी और ढुलाई के लिए नगरपालिका परिषद् लखीमपुर के लाइसेंसधारी ऑपरेटरों अथवा प्रशिक्षित सफाई कर्मियों की ही सेवाएं लें।

(ख) मालिक/अधिभोगी डीस्लजिंग सेवा से सम्बंधित सम्पूर्ण जानकारी ऑपरेटर को प्रदान करेगा (परिशिष्ट-6 देखें)।

14— फीकल स्लज एवं सेप्टेज की निकासी/ढुलाई का शुल्क—

(क) समय-समय पर अधिसूचित स्थानों पर फीकल स्लज एवं सेप्टेज निकासी और ढुलाई का शुल्क निकाय का नामित अधिकारी द्वारा अधिसूचित किया जाएगा (परिशिष्ट 2 देखें)।

(ख) शहर में जब कभी नगरपालिका परिषद् लखीमपुर द्वारा "डीस्लजिंग" पालन करने का फैसला किया जाता है, तो फीकल स्लज निकासी शुल्क को 'सफाई शुल्क' से बदल दिया जाएगा या इसे संपत्ति/जल कर में शामिल किया जा सकता है, जिसे नगरपालिका परिषद् लखीमपुर द्वारा समय-समय पर अधिसूचित किया जाएगा।

(ग) लाइसेंस धारी ऑपरेटर सम्पत्ति के मालिक/अभिग्राही से निकाय द्वारा समय-समय पर अधिसूचित शुल्क से अधिक राशि नहीं वसूलेगा।

(घ) फीकल स्लज एवं सेप्टेज की निकासी और ढुलाई कार्य के लिए अधिसूचित शुल्क से अधिक राशि मांगने पर लाइसेंस धारी ऑपरेटर का लाइसेंस रद्द कर दिया जाएगा और इन उपविधियों के उल्लंघन के लिए निर्धारित जुर्माना लगाया जाएगा।

15— फीकल स्लज एवं सेप्टेज की ढुलाई के वाहन—

(क) फीकल स्लज एवं सेप्टेज निकासी और ढुलाई कार्य केवल लाइसेंस प्राप्त ऑपरेटर या नगरपालिका परिषद् लखीमपुर के प्रशिक्षित सफाई कर्मियों द्वारा ही किया जाएगा।

(ख) आवश्यक शर्तों के पूरा नहीं होने पर भी वैक्यूम टैंकर को 1 वर्ष की अवधि के लिए पंजीकृत कराया जा सकता है। ऐसी स्थिति में, संबंधित ऑपरेटर को निश्चित समय सीमा के भीतर वैक्यूम टैंकर को समुन्नत अपग्रेड करना चाहिए।

(ग) डीस्लजिंग वाहनों का परिचालन फीकल स्लज एवं सेप्टेज की सुरक्षित और कुशल ढुलाई के लिए समय-समय पर नगरपालिका परिषद् लखीमपुर द्वारा चिह्नित निर्दिष्ट मार्गों पर ही किया जाएगा।

(घ) ऑपरेटर को जारी लाइसेंस की एक प्रति और नगरपालिका परिषद् लखीमपुर वाहन का पंजीकरण नंबर फीकल स्लज एवं सेप्टेज की ढुलाई हेतु प्रयुक्त वाहन पर स्पष्टता से प्रदर्शित किया जाएगा।

(ङ) वाहन/टैंकर को पीले रंग से पेंट किया जाएगा जिस पर लाल रंग में (सावधानी के लिए) "septic tank waste" (अंग्रेजी में) और "मलकुंड अपशिष्ट" (हिंदी में) लिखा होगा।

(च) फीकल स्लज एवं सेप्टेज की ढुलाई में प्रयुक्त प्रत्येक वाहन में जीपीएस उपकरण (निकाय द्वारा प्रदत्त) लगाया जाएगा और इसका एक्सेस अधिकार अधिशासी अधिकारी और ऐसे वाहनों की ट्रैकिंग के लिए निकाय द्वारा अधिसूचित एजेंसी के पास होगा।

16— ढुलाई के दौरान सावधानी— लाइसेंस धारी ऑपरेटर यह सुनिश्चित करेगा कि निस्तारण के लिए डीस्लजिंग स्थल से अधिसूचित स्थान तक ढुलाई के दौरान फीकल स्लज एवं सेप्टेज से कोई रिसाव या छलकाव न हो।

17— दुर्घटना की स्थिति में बचावकारी उपाय— फीकल स्लज एवं सेप्टेज ले जाने वाला वाहन संचलन के दौरान किसी भी आकस्मिक छलकाव के कारण पर्यावरण के लिए किसी भी खतरे से बचने के लिए पर्याप्त रूप से सुसज्जित होना चाहिए।

18— दुर्घटना की स्थिति में लाइसेंसधारी ऑपरेटर की जिम्मेदारी— किसी दुर्घटना या आपदा की स्थिति में लाइसेंसधारी ऑपरेटर किसी भी व्यक्ति, वाहन, संपत्ति या पर्यावरण को होने वाले किसी भी प्रकार के नुकसान के लिए पूर्ण जिम्मेदार होगा और ऐसे में यदि किसी प्राधिकारी अथवा न्यायालय द्वारा पीड़ितों/उनके कानूनी उत्तराधिकारियों को किसी प्रकार के क्षति शुल्क या मुआवजा प्रदान किए जाने का निर्णय दिया जाता है तो उसका भुगतान उसे ही करना होगा।

19— नियुक्त कर्मियों के लिए सुरक्षा-उपाय— हाथ में रखकर इस्तेमाल होने वाले गैस-डिटेक्टर, गैस-मास्क, सुरक्षा उपकरण, ऑक्सीजन सिलेंडर के साथ ऑक्सीजन-मास्क और प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स आदि के प्रावधान सहित सभी सुरक्षा उपाय तथा प्रोहिबिशन ऑफ एम्प्लॉयमेंट एज मैनुअल स्कैवेंजर्स एंड देयर रिहैबिलिटेशन एक्ट, 2013 में निर्दिष्ट ऐसे अन्य उपाय उपलब्ध कराने के लिए लाइसेंसधारी ऑपरेटर जिम्मेदार होगा।

20— फीकल स्लज एवं सेप्टेज का निस्तारण—

(क) लाइसेंसधारी ऑपरेटर नगरपालिका परिषद् लखीमपुर द्वारा समय-समय पर अधिसूचित स्थानों पर ही फीकल स्लज एवं सेप्टेज का निस्तारण करेगा।

(ख) लाइसेंस धारी ऑपरेटर इन उपविधि के फॉर्म 3 में निर्धारित विधिवत हस्ताक्षरित फीकल स्लज एवं सेप्टेज निकासी और निस्तारण फॉर्म, जो विधिवत रूप से भरा गया और हस्ताक्षरित हो, अधिसूचित स्थानों पर फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्राप्त करने के लिए नामित निकाय के अधिकारी के पास जमा करेगा (परिशिष्ट-6 देखें)।

(ग) होस्ट यूएलबी ये सुनिश्चित करेगा की उपचार सुविधा पर यूएलबी क्लस्टर या ग्राम पंचायत का पंजीकृत ऑपरेटर ही फीकल स्लज एवं सेप्टेज का निस्तारण करें।

21— निकाय (उपचार सुविधा वाले) के अधिकार—

(क) निकाय किसी पास के निकाय या ग्राम पंचायतों के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) (परिशिष्ट 7, फॉर्म-4) पर हस्ताक्षर करेगा और इसके तहत केंद्र पर उपलब्ध उपचार सुविधा पर फीकल स्लज एवं सेप्टेज के सुरक्षित निस्तारण की अनुमति देने के लिए होस्ट यूएलबी बन जाएगा।

(ख) नगरपालिका परिषद् लखीमपुर होस्ट यूएलबी से जुड़े यूएलबी क्लस्टर की सीमा के अंदर काम करने वाले (निजी/सरकारी) ऑपरेटरों को उपचार सुविधा के परिचालन अवधि, निस्तारण प्रक्रिया, टिप्पिंग शुल्क और निर्दिष्ट अवधि के दौरान प्रतिबंधित किए गए वितरण मार्गों के बारे में सूचित करेगा।

(ग) नगरपालिका परिषद् लखीमपुर वैक्यूम टैंकर की गुणवत्ता और रखरखाव का निरीक्षण करेगा और उनपर नियंत्रण रखेगा।

(घ) संग्रहीत किए जाने वाले और उपचार सुविधा पर ढोए जाने वाले फीकल स्लज एवं सेप्टेज की गुणवत्ता का निरीक्षण निकाय का नाम, द्वारा किया जाएगा।

(ङ) होस्ट यूएलबी अन्य क्लस्टर यूएलबी या ग्राम पंचायत को फीकल स्लज एवं सेप्टेज की उस स्वीकार्य मात्रा के बारे में जानकारी देगा जिसे “उपचार सुविधा” में निस्तारित किया जा सकता है।

(च) एमओयू अवधि के किसी भी समय, यदि “होस्ट यूएलबी” को लगे कि क्लस्टर यूएलबी/ग्राम पंचायत से आने वाले फीकल स्लज एवं सेप्टेज को निस्तारित नहीं किया जा सकता है, तो ऐसी स्थिति आने से पहले होस्ट यूएलबी कम से कम 15 दिन पहले इसकी सूचना देगा।

22— निकाय (बिना उपचार सुविधा वाला) के कर्तव्य—

(क) निकाय या ग्राम पंचायत जिनके पास उपचार सुविधा नहीं है उस निकाय का नाम, होस्ट यूएलबी के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर करेगा और होस्ट यूएलबी के पास उपलब्ध उपचार सुविधा पर फीकल स्लज एवं सेप्टेज के सुरक्षित निस्तारण के लिए क्लस्टर यूएलबी का सदस्य बनेगा।

(ख) निकाय या ग्राम पंचायत (जिनके पास उपचार संयंत्र नहीं है) अपने प्रशासनिक क्षेत्र में काम करने वाले (निजी/सरकारी) ऑपरेटरों को उपचार सुविधा की कार्य अवधि, निस्तारण प्रक्रिया, टिपिंग शुल्क (यदि कोई हो) निकाय द्वारा निर्धारित निर्दिष्ट घंटों के दौरान विशिष्ट आपूर्ति मार्ग के जानकारी देंगे।

(ग) यदि निकाय होस्ट यूएलबी के क्लस्टर यूएलबी की स्पष्ट सीमा में नहीं है, तो निकाय उपचार के बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए राज्य के पास पहुंच सकता है और फीकल स्लज एवं सेप्टेज के लिए एक अंतरिम निस्तारण स्थल विकसित कर सकता है।

(घ) नगरपालिका परिषद् लखीमपुर विनिर्दिष्ट वाहनों की गुणवत्ता और रखरखाव का निरीक्षण करेगा और उन पर नियंत्रण रखेगा।

(ङ) होस्ट यूएलबी संग्रहीत किए जाने और निर्दिष्ट निस्तारण स्थल तक ढोए जाने वाले फीकल स्लज एवं सेप्टेज की गुणवत्ता का निरीक्षण करेगा।

(च) यदि “होस्ट यूएलबी” की क्षमता क्लस्टर यूएलबी के फीकल स्लज एवं सेप्टेज को निबटाने के लिए कम पड़ जाता है, तो नगरपालिका परिषद् लखीमपुर को एक नए “होस्ट यूएलबी” की खोज करनी चाहिए या नए “उपचार सुविधा” के निर्माण के लिए केंद्र के पास अनुरोध भेजना चाहिए।

23— कर्मियों का प्रशिक्षण— लाइसेंस प्राप्त ऑपरेटर फीकल स्लज एवं सेप्टेज की फीकल स्लज निकासी, डुलाई और निस्तारण में तैनात कर्मचारियों के सावधिक प्रशिक्षण के लिए उत्तरदायी होगा।

24— कर्मियों की नियमित स्वास्थ्य जांच— यह सुनिश्चित करने का दायित्व लाइसेंसधारी ऑपरेटर का होगा कि प्रत्येक नियुक्त कर्मी का साल में कम से कम एक बार स्वास्थ्य जांच होनी चाहिए और उसका रिकॉर्ड निकाय को दिया जाना चाहिए, जिसमें विफल रहने पर लाइसेंसधारी ऑपरेटर को समय-समय पर अधिसूचित दंड का भुगतान करना पड़ सकता है।

25— बीमा— लाइसेंसधारी ऑपरेटर द्वारा काम पर रखे गए कर्मियों का प्रोहिबिशन ऑफ एम्प्लॉयमेंट एज मैनुअल स्कैवेंजर्स एंड देयर रिहैबिलिटेशन एक्ट, 2013 और 2003 की रिट याचिका संख्या 583 (सफाई कर्मचारी

आंदोलन तथा अन्य बनाम भारत संघ तथा अन्य) में फीकल स्लज एवं सेप्टेज की निकासी, दुलाई और निस्तारण की प्रक्रिया के दौरान दुर्घटना की स्थिति में सर्वोच्च न्यायालय के दिनांक 27 मार्च, 2014 के आदेश के तहत पीड़ितों अथवा उनके कानूनी उत्तराधिकारियों को दिए जाने वाले मुआवजे को कवर करने के लिए बीमा किया जाएगा।

26— लाइसेंस रद्द किया जाना— इन उपविधि सहित हाथ से मैला ढोने वालों के रूप में रोजगार निषेध और उनका पुनर्वास एकट, 2013 के किसी भी प्रवधान के उल्लंघन के मामले में, लाइसेंस धारी ऑपरेटर समय-समय पर अधिसूचित दंड के भुगतान करने का भागी होगा, जिसमें लाइसेंस रद्द किया जाना और निष्पादन गारंटी का अपहार शामिल है जो शहरी स्वच्छता समिति (CSC) अथवा विनिर्दिष्ट अधिकारी (अधिकारियों) की सिफारिश के मुताबिक होगा।

अध्याय-VI

फीकल स्लज एवं सेप्टेज का उपचार और पुनः उपयोग / निस्तारण

27— उपचार/निस्तारण स्थल की पहचान—

(क) नगरपालिका परिषद् लखीमपुर उस स्थल (स्थलों) की पहचान करेगा और सूचित करेगा जहां लाइसेंस प्राप्त ऑपरेटर या नगरपालिका परिषद् लखीमपुर के प्रशिक्षित सफाई कर्मी द्वारा फीकल स्लज एवं सेप्टेज का उपचार/निस्तारण किया जाएगा।

(ख) उपचार सुविधा के अभाव में (निकाय का नाम), आस पास के होस्ट यूएलबी जिसमें सुचारू उपचार सुविधा हो, उनके साथ समझौता ज्ञापन करके उसके सुविधा का इस्तेमाल करेगा (फॉर्म 4 परिशिष्ट 7)

(ग) फीकल स्लज एवं सेप्टेज के सुरक्षित निस्तारण हेतु नगरपालिका परिषद् लखीमपुर के आसपास के क्षेत्र में "क्लस्टर यूएलबी" की अनुपस्थिति की स्थिति में, उपचार के बुनियादी ढांचे (खंड 28) के निर्माण तक एक अंतरिम निस्तारण योजना का विकल्प चुना जा सकता है।

28— फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्राप्त करने के लिए अवसंरचना का निर्माण— नगरपालिका परिषद् लखीमपुर जरूरी आधारभूत ढांचा तैयार करेगा (यदि अनुप्रयोज्य हो तो आदर्श उपचार संयंत्र की व्यवस्था होने तक अंतरिम उपचार बुनियादी ढांचा भी) और पंजीकृत वाहनों द्वारा लाए गए फीकल स्लज एवं सेप्टेज के उपचार/निस्तारण की सुविधा के लिए अधिसूचित स्थल या स्थलों पर आवश्यक उपकरण प्रदान करेगा।

29— फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्राप्त करने के लिए कर्मचारियों की नियुक्ति—

(क) फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्राप्त करने और इसे संबंधित उपचार सुविधा में स्थानांतरित करने के लिए नगरपालिका परिषद् लखीमपुर द्वारा प्रत्येक अधिसूचित स्थल पर पर्याप्त संख्या में कर्मचारियों (लिंग तटस्थ) को नियुक्त किया जाएगा। [यदि निकाय के पास उपचार सुविधा है यानी होस्ट यूएलबी]

(ख) फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्राप्त करने और इसे अंतरिम "उपचार सुविधा" में स्थानांतरित करने या इसे "होस्ट यूएलबी" के "उपचार सुविधा" में भेजने के लिए निकाय प्रत्येक अधिसूचित स्थल पर पर्याप्त कर्मचारी (लिंग तटस्थ) नियुक्त करेगा। [यदि निकाय के पास उपचार सुविधा नहीं है यानी आप क्लस्टर यूएलबी का हिस्सा हैं।

30— फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्राप्त करने का समय— [निकाय(या फिर यदि लागू हो तो होस्ट यूएलबी)] द्वारा नियुक्त कर्मचारियों द्वारा प्रत्येक अधिसूचित स्थल पर समय-समय पर [निकाय (या होस्ट यूएलबी लागू हो)] द्वारा अधिसूचित अवधि के दौरान फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्राप्त किया जाएगा।

31— **औद्योगिक अपशिष्ट जिनकी अनुमति नहीं है—** अधिसूचित स्थल पर औद्योगिक अपशिष्ट वाले फीकल स्लज एवं सेप्टेज के निस्तारण की अनुमति नहीं दी जाएगी।

32— **फीकल स्लज एवं सेप्टेज पर प्रशिक्षण—** नगरपालिका परिषद् लखीमपुर द्वारा नियुक्त कर्मचारियों को अधिसूचित स्थल पर फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्राप्त करने और उपचार/निस्तारण करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा।

33— **उपचारित फीकल स्लज एवं सेप्टेज का दुबारा इस्तेमाल—** निकाय किसानों को अनुपचारित फीकल स्लज एवं सेप्टेज के कृषि अनुप्रयोग के स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक करेगा और उन्हें उपचार सुविधा से उपचारित फीकल स्लज एवं सेप्टेज इस्तेमाल करने को प्रोत्साहित करेगा।

अध्याय-VII

प्रशासन और प्रवर्तन

34— प्रशासन और प्रवर्तन—

(क) इन नियमों की प्रशासनिक और प्रवर्तक शक्तियाँ [नगर आयुक्त/अधिशासी अधिकारी] अथवा नगर आयुक्त/अधिशासी अधिकारी द्वारा विधिवत अधिकृत निकाय के अभिहित अधिकारी के पास रहेंगी।

(ख) नगरपालिका परिषद् लखीमपुर फीकल स्लज की निकासी, ढुलाई या उपचार की सेवाएं प्रदान करने के लिए समय-समय पर निर्धारित और अधिसूचित उपयोगकर्ता शुल्क (यूजर फीस) लगा सकता है। लागत वसूली सुनिश्चित करने के लिए, उपयोगकर्ताओं को इन सेवाओं के लिए भुगतान करना होगा।

(ग) निकाय का नाम शहरी स्वच्छता समिति (CSC) का गठन करेगा जो निकाय प्रशासनिक क्षेत्र में समग्र फीकल स्लज एवं सेप्टेज का पर्यवेक्षण और निगरानी सुनिश्चित करेगा।

(घ) नगरपालिका परिषद् लखीमपुर फीकल स्लज एवं सेप्टेज की निकासी ढुलाई के लिए सुरक्षित तरीके सुनिश्चित करने के लिए एक इमर्जन्सी रिसपोन्स सैनिटेशन यूनिट (ईआरएसयू) नियुक्त करेगा।

35— **जांच के लिए विशेष शक्ति—** इन उपविधियों के प्रभावी तरीके से लागू करने और प्रवर्तन के उद्देश्य से, नगरपालिका परिषद् लखीमपुर के पास किसी भी समय किसी भी परिसर में, परिवहन वाहनों और फीकल स्लज एवं सेप्टेज उपचार सुविधा के निरीक्षण की शक्ति होगी।

36— नियम उल्लंघन और जुर्माना—

(क) इन उपविधियों के किसी भी प्रावधान का उल्लंघन करने पर व्यक्ति को नियम अनुपालन के लिए नोटिस भेजा जाएगा।

(ख) किसी भी व्यक्ति पर इन नियमों के तहत दंडात्मक प्रावधान लागू होंगे, यदि ऐसा व्यक्ति— (क) इन उपविधियों के किसी भी प्रावधान का उल्लंघन करता है या उसका पालन करने में विफल रहता है, (ख) इन विनियमों के तहत किसी भी शक्ति के प्रयोग या किसी कर्तव्य निष्पादन में निकाय के एक अधिकृत अधिकारी या अन्य अधिकारी के काम में बाधा डालता है, या हस्तक्षेप करता है, (ग) किसी भी ओएसएस/सीवर की हाथ से फीकल स्लज निकासी की प्रक्रिया संचालित कराता है।

(ग) इन उपविधियों के प्रावधानों के उल्लंघन का दोषी पाए जाने वाले व्यक्ति को परिशिष्ट-8 में उल्लेखित राशि की सीमा तक दंडित किया जाएगा और उचित कानून के तहत मुकदमा चलाया जाएगा और जैसा भी मामला हो, दोषी पाए जाने की स्थिति में एफ एस एस निकासी/ढोने के वाहन भी जब्त हो सकता है।

(घ) जो कोई भी, किसी भी मामले में, जिसमें दंड परिशिष्ट-8 में स्पष्ट रूप से प्रदान नहीं किया गया है, दोषी पाया जाता है, समय-समय पर नगरपालिका परिषद् लखीमपुर द्वारा तय किए जाने वाले जुर्माने के साथ दंडनीय होगा।

(ङ) संदेह दूर करने के लिए, यह घोषित किया जाता है कि इन उपविधियों की कोई भी बात किसी भी व्यक्ति को उस समय लागू किसी अन्य प्रासंगिक अधिनियम या इन उपविधियों के तहत दंडनीय कोई कार्य के लिए या चूक के लिए उसके तहत मुकदमा चलाने, दंडित करने से नहीं रोकेगा।

37— अपील— निकाय के अधिकृत अधिकारी के निर्णय से असंतुष्ट कोई भी व्यक्ति इन उपविधियों के तहत अधिशासी अधिकारी के पास इस तरह के निर्णय के विरुद्ध अपील कर सकते हैं।

38— विवाद समाधान उपविधि— इन उपविधियों के क्रियान्वयन के संदर्भ में उत्पन्न किसी भी विवाद का समाधान केवल शहर (निकाय का नाम) के अधिकार क्षेत्र वाले सक्षम न्यायालय द्वारा भारतीय कानूनों के तहत किया जाएगा।

39— फीकल स्लज एवं सेप्टेज उपविधियों में संशोधन— मानक प्रक्रिया का पालन करते हुए आवश्यकता पड़ने पर निकाय के पास फीकल स्लज एवं सेप्टेज उपविधियों में संशोधन करने का अधिकार होगा।

परिशिष्ट-1

(खंड 2 (23), 3(ग) और 5 (क) देखें)

सेप्टिक टैंक का डिजाइन— सेप्टिक टैंक स्थापित करने के लिए बीआईएस कार्य संहिता प्रदान करता है (आईएस 2470 [भाग 1] 1985)। सेप्टिक टैंक के निर्माण के लिए यह कुछ मान्यताओं के आधार पर डिजाइन मानदंड प्रदर्शित करता है। छोटे और बड़े क्षेत्रों के लिए यह आबादी को ध्यान में रखते हुए डिजाइन इंस्टॉलेशन का विवरण प्रदान करता है। केंद्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं पर्यावरण अभियांत्रिकी संगठन, एमओएचयूए के अनुसंधान प्रभाग द्वारा प्रकाशित सीवरेज और मलजल उपचार पर मैनुअल के भाग ए में ओएसएस पर व्यापक डिजाइन मानक दिए गए हैं। साथ ही, भारत में सेप्टिक टैंक को आमतौर पर काले पानी के लिए ही हाइलाइट किया जाता है।

सेप्टिक टैंक के विनिर्देशन—

- 1— आयताकार: लंबाई और चौड़ाई का अनुपात: 2 से 4
- 2— गहराई 1.0 से 2.5 मी. के बीच
- 3— दो कक्ष: पहला कक्ष कुल लंबाई का 2/3
- 4— तीन कक्ष: पहला कक्ष कुल लंबाई का आधा
- 5— मशीन— छेद (मैनहोल) प्रत्येक कक्ष के ऊपर
- 6— निर्विवाद, टिकाऊ और स्थिर टैंक

सेप्टिक टैंक का अनुशंसित आकार—

उपयोगकर्ता की संख्या	लंबाई	चौड़ाई	द्रव की गहराई (सफाई अंतराल)
1	2	3	4
	मीटर	मीटर	मीटर
5	1.5	0.75	1.05
10	2	0.90	1.40
15	2	0.90	2.00
20	2.3	1.10	1.80

नोट 1— सेप्टिक टैंक का आकार कुछ अनुमानों (तरल प्रवाह) पर आधारित होता है, सेप्टिक टैंक के आकार का चयन करते समय सटीक गणना की जानी चाहिए। इस वारे में जानकारी के लिए, कृपया वीआईएस 2470 (भाग 1), 1985 देखें।

नोट 2— फ्री बोर्ड के लिए 300 मिमी का प्रावधान रखना चाहिए।

स्रोत: सीवरेज और मलजल उपचार पर मैनुअल-भाग ए: इंजीनियरिंग। सीपीएचईईओ, 2012

सेप्टिक टैंक की क्षमता— टैंक की क्षमता फीकल स्लज निकासी की अवधि को समझने में उपयोगी होती है, सेप्टिक टैंक की क्षमता मापने में निम्नलिखित प्रमुख बिंदुएं हैं—

1— अवसादन (सेडीमेंटेशन) रु 0 निलंबित ठोस पदार्थों के पर्याप्त अवसादन के लिए प्रत्येक 10 ली./मिनट की पीक दर से प्रवाह के लिए 0.92 वर्ग मीटर क्षेत्रफल की आवश्यकता होती है। आम तौर पर, अवसादन क्षेत्र की गहराई 0.3 मीटर होती है।

2— फीकल स्लज डाइजेशन: डेएजेशन जोन की क्षमता प्रति कैपिटा 0.032 होनी चाहिए

3— फीकल स्लज और मल भंडारण: फीकल स्लज सफाई के 1 साल के अंतराल के लिए, एक फीकल स्लज भंडारण क्षमता $0.0002'365 = 0.073 \text{ m}^3/\text{कैपिटा}$ की आवश्यकता होती है।

4— फ्री बोर्ड रु 0 कम से कम 0.3 मी०

परिशिष्ट-2

(खंड 14 (क) और 5 (ग) देखें)

नगर पालिका परिषद लखीमपुर में फीकल स्लज निकासी और सेप्टेज की ढुलाई सेवा के लिए उपयोगकर्ता शुल्क (यूजर फीस) की सूची (अनुमानित)

क्र0सं0	श्रेणी	शुल्क की सीमा (प्रति ट्रिप 3000 लीटर तक)
1	2	3
रुपये—		
1	आवासीय	1,500
2	व्यवसायिक	2,000
3	सरकारी स्कूल / कालेज	1,500
4	निजी स्कूल / कालेज	2,000
5	सरकारी कार्यालय	1,500
6	होटल, रेस्टोरेन्ट, निजी अस्पताल	2,000
7	राइस मिल / अन्य मिल व औद्योगिक संस्थान	2,500

स्रोत— सेप्टेंबर प्रबंधन के लिए उत्तराखण्ड राज्य प्रोटोकॉल 2022 से एक संदर्भ लिया गया है।

नोट 1— उपयोगकर्ता शुल्क (यूजर फीस) की इन सीमाओं में निकायद्वारा समय-समय पर संशोधन किया जा सकता है

2— उपरोक्त श्रेणियाँ प्रति 3000 लीटर फीकल स्लज एवं सेप्टेज सेप्टेज की निकासी पर आधारित हैं। रेंज की ऊपरी सीमा पर विचार करना चाहिए जब अन्य कचरे (पॉलीवैग की उच्च संख्या, निस्तारण किए गए कपड़े, सैनिटरी पैड, डायपर, कंडोम, प्लास्टिक की बोतलें, अन्य कचरे) को भी व्यापक तरीके से डाला गया हो।

परिशिष्ट-3

(खंड 7 (छ) देखें)

बचाव उपस्कर और सुरक्षा उपकरण— कार्य स्थल पर निम्नलिखित बचाव उपस्कर और सुरक्षा उपकरण उपलब्ध होने चाहिए—

(क) शरीर के सुरक्षा वस्त्र मुख्य रूप से पॉलिएस्टर से बने होते हैं, जो रिफ्लेक्टिव होते हैं और रासायन गिरने से शरीर की रक्षा करते हैं

(ख) शरीर की रक्षा सज्जा/सुरक्षा बेल्ट

(ग) सर्जिकल फेस मास्क/रेस्परेटर जो धूल, धुंध और जीवाणुओं आदि से बचाता है

(घ) सेपटी टॉर्च

(ङ) भारी रसायन प्रतिरोधी दस्ताने जो यांत्रिक बचाव और खतरनाक सामग्री के छलक कर गिरने से अतिरिक्त सुरक्षा देते हैं और ब्यूटाइल के बने होते हैं

- (च) संक्रामक पदार्थों को आंखों में जाने से रोकने के लिए रासायनिक छीटे झेलने की क्षमता वाले सेपटी गॉगल्स
- (छ) टॉर्च के साथ लगे सेपटी हेलमेट (कॉर्डेड) जो अंधेरे में काम करने के लिए मददगार होता है
- (ज) दुबारा इस्तेमाल होने वाला इयरप्लग, जो एक लचीले बैंड से अच्छी तरह जुड़ा होता है जिसे जरूरत न होने पर गर्दन के चारों ओर पहना जा सकता है। ये सिलिकॉन के बने होने चाहिए और वैक्यूम टैंकरों के आसपास उपयोगी होते हैं जहां औसत ध्वनि स्तर 85dBa से अधिक होता है
- (झ) आपातकालीन मेडिकल ऑक्सीजन पुनर्जीवन किट
- (ञ) गैस मॉनीटर
- (ट) हेड लैंप
- (ठ) गाइड पाइप सेट
- (ड) सेपटी ट्राइपॉड सेट
- (ढ) वेडर बूट
- (ण) एयर कंप्रेसर और ब्लोअर
- (त) मॉड्यूलर एयरलाइंस सप्लाई ट्रॉली सिस्टम
- (थ) रेनकोट

परिशिष्ट-4

(खंड 6 (ग) और 8 देखें)

नगर पालिका परिषद लखीमपुर

Registration form for Private Desludging Operator

फॉर्म 1— निकाय (निकाय का नाम) में फीकल स्लज एवं सेप्टेज के संग्रहण, परिवहन और निपटान के लिए लाइसेंस आवेदन पत्र।

फीकल स्लज एवं
सेप्टेज निकालने
वाले ऑपरेटर/
ठेकेदारों का एक
पासपोर्ट साइज
का फोटो
चिपकाएं

1— आवेदक का नाम (श्री/सुश्री)—.....

2— पता—.....

3— पंजीकृत कार्यालय का पता—.....

4— टेलीफोन नंबर (कार्यालय)—.....

(मो0)—..... ईमेल आईडी—.....

5—

मल-कीचड़ साफ करने वाले वाहनों का विवरण

क्रम सं	वाहन का रजिस्ट्रेशन नंबर	वाहनों का प्रकार (ट्रैक्टर-माउंटेड या ट्रक माउंटेड)	प्रतिरूप (मॉडल) संख्या	वैक्यूम टैंकरों / टैंकर की छमता (लीटर में)	बीमा किस तारीख तक वैध है	टिप्पणी
1	2	3	4	5	6	7
1						
2						
3						
4						

6— लाइसेंस की प्रॉसेसिंग फीस के भुगतान का विवरण, नकद— (रसीद संख्या)

7— संलग्न प्रलेखों की सूची (स्व-प्रमाणित प्रति) (हां / नहीं)—

दस्तावेज के प्रकार हां / नहीं	दस्तावेज के प्रकार हां / नहीं	दस्तावेज के प्रकार हां / नहीं
पहचान प्रमाण	पता प्रमाण	कर्मचारियों की सूची
पंजीकरण प्रमाणपत्र	फिटनेस सर्टिफिकेट	बीमा और पॉलिसी अनुसूची के प्रमाण पत्र
प्रदूषण प्रमाणपत्र	ड्राइविंग लाइसेंस	पासपोर्ट साइज फोटो

अनुलग्नकों की कुल संख्या—

मैं/हम प्रमाणित करते हैं कि मेरे/हमारे द्वारा कॉलम 1 से 8 में दी गई जानकारी मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य है। मैं यह भी प्रमाणित करता हूं कि मैंने संलग्न नियमों और शर्तों को पढ़ और समझ लिया है और उनका पालन करने के लिए सहमत हूं। मैं सहमत हूं कि यदि मेरे द्वारा दी गई कोई भी जानकारी गलत पाई जाती है तो लाइसेंस के लिए आवेदन किसी भी समय रद्द करने के लिए उत्तरदायी होगा।

आवेदक के हस्ताक्षर

दिनांक—.....

नियम और शर्तें—

1— फीकल स्लज एवं सेप्टेज को केवल एक यूएलबी द्वारा जारी लाइसेंस प्राप्त ऑपरेटर द्वारा ही संग्रहीत किया जाएगा और दुलाई की जाएगी।

2— निर्दिष्ट उपचार संयंत्र तक फीकल स्लज एवं सेप्टेज के संग्रह और ढुलाई के लिए शुल्क यूएलबी द्वारा समय-समय पर निर्धारित किया जाएगा। कोई भी अनुज्ञाप्तिधारी ऑपरेटर घर/संपत्ति के मालिक से निर्धारित शुल्क से अधिक कोई राशि नहीं वसूलेगा।

3— फीकल स्लज एवं सेप्टेज की ढुलाई यूएलबी द्वारा इस प्रयोजन के लिए अनुमोदित वाहनों द्वारा ही किया जाएगा।

4— लाइसेंसधारी ऑपरेटर यह सुनिश्चित करेगा कि संग्रह स्थल से निर्दिष्ट उपचार संयंत्र तक ढुलाई के दौरान फीकल स्लज एवं सेप्टेज का कोई रिसाव न हो।

5— फीकल स्लज एवं सेप्टेज ले जाने वाला वाहन संचलन के दौरान किसी भी आकस्मिक छलकाव के कारण पर्यावरण के लिए किसी भी खतरे से बचने के लिए पर्याप्त रूप से सुसज्जित होना चाहिए।

6— अनुज्ञाप्तिधारी केवल निर्दिष्ट शोधन संयंत्र में ही फीकल स्लज एवं सेप्टेज का निपटान करेगा।

7— फीकल स्लज एवं सेप्टेज के परिवहन के लिए उपयोग किए जाने वाले वाहन पर लाइसेंस की एक प्रति प्रमुखता से प्रदर्शित की जाएगी।

8— वाहन/टैंकर कर को पीले रंग से पेंट किया जाएगा जिस पर लालरंग में सावधानी के साथ "septic tank waste" (अंग्रेजी में) और "मलकुंड अपशिष्ट" (हिंदी में) लिखा होगा।

9— निर्दिष्ट उपचार संयंत्र सप्ताह में xy दिनों पर x: am से y: pm तक फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्राप्त करेगा। ऑपरेटरों को तदनुसार अपने डीस्लजिंग संचालन की योजना बनानी चाहिए।

10— प्रभावी सफाई सेवाएं प्रदान करने और व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों का उपयोग सुनिश्चित करने के लिए तैनात कर्मचारियों के नियमित प्रशिक्षण के लिए लाइसेंसधारी जिम्मेदार होगा।

11— उपरोक्त बिंदुओं में से किसी के उल्लंघन के मामले में, लाइसेंस रद्द करने के लिए उत्तरदायी होगा, लाइसेंसधारक की सुरक्षा जब्त कर ली जाएगी और वह इन विनियमों के उल्लंघन के लिए निर्धारित दंड का भुगतान करने के लिए भी उत्तरदायी होगा।

परिशिष्ट-5

खंड 6 (अ) और 8 देखें

लाइसेंस प्रारूप

नगर पालिका परिषद लखीमपुर

License for Private Desludging Operator

फॉर्म 2— फीकल स्लज एवं सेप्टेज के संग्रहण, ढुलाई और निस्तारण हेतु लाइसेंस प्रदान करना निकाय नगर पालिका परिषद लखीमपुर में फीकल स्लज एवं सेप्टेज मल-कीचड़ और सेप्टेज के संग्रहण, ढुलाई और निस्तारण के लिए लाइसेंस

इसके द्वारा अनुमति दी जाती है—

1— आवेदक का नाम (श्री/सुश्री).....

फीकल स्लज एवं सेप्टेज निकालने वाले ऑपरेटर/ठेकेदार का निकाय मोहर के साथ एक पासपोर्ट साइज का फोटो चिपकाएं

2— पत्राचार का पता—.....

.....

.....

3— निकाय (नगर निगम/नगर पालिका परिषद/नगर पंचायत) का नाम) में फीकल स्लज/सेप्टेज प्रबंधन सेवाएं प्रदान करने के लिए लाइसेंस संख्या—.....

4— मान्यता—..... से—..... तक

5— वाहन (वाहनों) का रजिस्ट्रेशन नंबर— (क)—..... (ख)—.....
(ग)—..... (घ)—.....

लाइसेंस, लाइसेंस धारक द्वारा पिछले पृष्ठ में बताई गई शर्तों के अनुपालन के अधीन होगा।

जारी करने वाले प्राधिकारी के हस्ताक्षर

नियम और शर्तें—

1— फीकल स्लज एवं सेप्टेज को केवल एक यूएलबी द्वारा जारी लाइसेंस प्राप्त ऑपरेटर द्वारा ही संग्रहीत किया जाएगा और ढुलाई की जाएगी।

2— निर्दिष्ट उपचार संयंत्र तक फीकल स्लज एवं सेप्टेज के संग्रह और ढुलाई के लिए शुल्क यूएलबी द्वारा समय-समय पर निर्धारित किया जाएगा। कोई भी अनुज्ञाप्तिधारी ऑपरेटर घर/संपत्ति के मालिक से निर्धारित शुल्क से अधिक कोई राशि नहीं वसूलेगा।

3— फीकल स्लज एवं सेप्टेज की ढुलाई यूएलबी द्वारा इस प्रयोजन के लिए अनुमोदित वाहनों द्वारा ही किया जाएगा।

4— लाइसेंसधारी ऑपरेटर यह सुनिश्चित करेगा कि संग्रह स्थल से निर्दिष्ट उपचार संयंत्र तक ढुलाई के दौरान फीकल स्लज एवं सेप्टेज का कोई रिसाव न हो।

5— फीकल स्लज एवं सेप्टेज ले जाने वाला वाहन संचलन के दौरान किसी भी आकस्मिक छलकाव के कारण पर्यावरण के लिए किसी भी खतरे से बचने के लिए पर्याप्त रूप से सुसज्जित होना चाहिए।

6— अनुज्ञाप्तिधारी केवल निर्दिष्ट शोधन संयंत्र में ही फीकल स्लज एवं सेप्टेज का निपटान करेगा।

7— फीकल स्लज एवं सेप्टेज के परिवहन के लिए उपयोग किए जाने वाले वाहन पर लाइसेंस की एक प्रति प्रमुखता से प्रदर्शित की जाएगी।

8— वाहन/टैंकर को पीले रंग से पेंट किया जाएगा जिस पर लालरंग में सावधानी के साथ "septic tank waste" (अंग्रेजी में) और "मलकुंड अपशिष्ट" (हिंदी में) लिखा होगा।

9— निर्दिष्ट उपचार संयंत्र सप्ताह में 07 दिनों पर 08 am से 06 pm तक फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्राप्त करेगा। ऑपरेटरों को तदनुसार अपने डीस्लजिंग संचालन की योजना बनानी चाहिए।

10— प्रभावी सफाई सेवाएं प्रदान करने और व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों का उपयोग सुनिश्चित करने के लिए तैनात कर्मचारियों के नियमित प्रशिक्षण के लिए लाइसेंसधारी जिम्मेदार होगा।

11— उपरोक्त बिंदुओं में से किसी के उल्लंघन के मामले में, लाइसेंस रद्द करने के लिए उत्तरदायी होगा, लाइसेंसधारक की सुरक्षा जब्त कर ली जाएगी और वह इन विनियमों के उल्लंघन के लिए निर्धारित दंड का भुगतान करने के लिए भी उत्तरदायी होगा।

परिशिष्ट-6

(खंड 13 (ख), 20 (ख) देखें)

फीकल स्लज एवं सेप्टेज के संग्रह, परिवहन और निपटान का रिकॉर्ड

फॉर्म 3— फीकल स्लज एवं सेप्टेज के संग्रह, परिवहन और निपटान का रिकॉर्ड (यूएलबी का नाम) में मल कीचड़ और सेप्टेज के संग्रह, परिवहन और निपटान का रिकॉर्ड बनाए रखने के लिए

दिनांक—..... | समय —.....

क— ऑनसाइट सिस्टम के मालिक का विवरण—

1— नाम—.....

2— पता—.....

(क)— वार्ड संख्या—.....

(क)— टेलीफोन नं०—.....

ख— रोकथाम—

1— निर्माण का वर्ष —..... 2— पिछला कीचड़ निकालना (MM/YYYY)—.....

2— आउटलेट मौजूद (हाँ / नहीं)—.....

3— यदि हाँ, तो किससे जुड़ा है—.....

4— रोकथाम के प्रकार—..... (चेकबॉक्स में उपयुक्त विकल्प चुनें)

रोकथाम के प्रकार	सही करें	रोकथाम के प्रकार	सही करें
सेप्टिक टैंक ट्रिवन		ट्रीवीन पिट (पंक्तिबध)	
संग्रह टैंक		ट्रिवन पिट (अनलाइन्ड)	
सोख्ता गड्ढे के साथ सेप्टिक टैंक		पूरी तरह से अटे टैंक	
सिंगल पिट (लाइनेड)		सिंगल पिट (अनलाइन)	

4— रोकथाम का आकार और आकार— नियंत्रण का प्रकार नियंत्रण का प्रकार टिक करें

5— संपत्ति के भीतर रोकथाम का स्थान (चेकबॉक्स में नीचे उपयुक्त विकल्प चुनें)

घर में स्थान	सही करें	घर में स्थान	सही करें
घर के पिछले हिस्से में		एक कमरे के फर्श के नीचे	
घर के सामने की तरफ		अन्य	

ग— कीचड़ साफ करना—

- 1— फीकल स्लज एवं सेप्टेज की मात्रा (लीटर).....
- 2— कीचड़ निकालने में लगने वाला समय—.....
- 3— ट्रिप की लंबाई (किमी).....
- 4— आने-जाने में समय—.....

घ— कीचड़ साफ करने वाले सेवा प्रदाता का विवरण—

ऑपरेटर का नाम :.....

ऊँचूटी पर खाली स्टाफ FSSTP ऑपरेटर :.....

ऊँचूटी पर टैंक सफाई स्टाफ के हस्ताक्षर

उपचार सुविधा

ऑपरेटर का हस्ताक्षर

परिशिष्ट-7

(खंड 21 (क) और 27 (ख) देखें)

होस्ट यूएलबी तथा बिना उपचार संयंत्र वाले निकाय के बीच समझौता ज्ञापन प्रारूप

फॉर्म 4— “होस्ट यूएलबी” पर उपलब्ध “उपचार संयंत्र” में फीकल स्लज एवं सेप्टेज के सुरक्षित निस्तारण की अनुमति के लिए समझौता ज्ञापन।

होस्ट निकाय के उपचार संयंत्र पर फीकल स्लज एवं सेप्टेज के सुरक्षित निस्तारण की अनुमति निकाय (नगर निगम/नगर पालिका परिषद/नगर पंचायत) और होस्ट निकाय (होस्ट निकाय का नाम) के बीच समझौता ज्ञापन के लिए फॉर्म

फीकल स्लज एवं सेप्टेज एवं सेप्टेज प्रबंधन के तहत, एक्सवार्इजेड निकाय (संपर्क करने वाले निकाय का नाम) नगर पालिका परिषद लखीमपुर की प्रशासनिक सीमाओं के भीतर घरों, सार्वजनिक/सामुदायिक शौचालयों के नियंत्रण से आने वाले फीकल स्लज एवं सेप्टेज और सेप्टेज (फीकल स्लज एवं सेप्टेज) के सुरक्षित निस्तारण हेतु जरूरी शर्त पूरा करने के लिए, “होस्ट यूएलबी” (होस्ट निकाय का नाम) के प्रशासन के तहत “उपचार संयंत्र” पर, समझौता।

प्रथम पक्ष "होस्ट यूएलबी" (नगर पालिका परिषद लखीमपुर)**द्वितीय पक्ष "एक्सवायजेड यूएलबी" (निकाय का नाम—.....)****उपबंध—**

1— यह कि "प्रथम पक्ष" दिनांक दिन/महीना/वर्ष (प्रारंभ तारीख) से दिन/महीना/वर्ष (प्रारंभ तारीख) तक "द्वितीय पक्ष" की प्रशासनिक सीमाओं से उनके "उपचार संयंत्र" पर आने वाले फीकल स्लज एवं सेप्टेज के सुरक्षित निस्तारण की अनुमति देगा। / वर्ष (अंतिम तिथि)

2— "प्रथम पक्ष" अपने प्रशासनिक क्षेत्र से आने वाले भार से समझौता करने से बचने के लिए अपने "उपचार संयंत्र" पर फीकल स्लज एवं सेप्टेज की दैनिक अनुमत मात्रा की जानकारी देगा।

3— यह कि "द्वितीय पक्ष" समझ के अनुसार "प्रथम पक्ष" को फीकल स्लज एवं सेप्टेज के निस्तारण के प्रति खेप टिप्पिंग शुल्क के रूप में ₹० (अनुबन्ध के अनुसार) देने के लिए सहमत है।

4— यह कि "प्रथम पक्ष" उपचार सुविधा के संचालन का समय, अनुमत पहुंच मार्ग, फीकल स्लज एवं सेप्टेज की अनुमत मात्रा, उपचार सुविधा का रखरखाव बंद आदि आवश्यक विवरण समय-समय पर साझा करेगा।

5— कि उपरोक्त कार्यों को करते समय बीच में आने वाली किसी भी कठिनाई को दोनों पक्ष मिलकर सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाएँ।

6— कि "द्वितीय पक्ष" केवल लाइसेंसधारी फीकल स्लज निकासी ऑपरेटर को प्रथम पक्ष की उपचार सुविधा पर फीकल स्लज एवं सेप्टेज के निस्तारण की अनुमति देगा।

7— प्रथम पक्ष उपचार सुविधा में उनके लाइसेंस पर "द्वितीय पक्ष" की मुहर के साथ लाइसेंसधारी ऑपरेटर का प्रवेश सुनिश्चित करेगी।

प्रथम पक्ष

अधिशाषी अधिकारी का हस्ताक्षर
लखीमपुर

द्वितीय पक्ष

अधिशाषी अधिकारी का हस्ताक्षर
लखीमपुर

परिशिष्ट-8**जुर्माना और फाइन**

क्रम संख्या	विवरण	खंड संख्या	फाइन सीमा	जुर्माना (किसी अन्य पीनल एक्शन में)
1	2	3	4	5
रुपये				
1.1	नाला/सड़क/खुले क्षेत्र में अपशिष्ट जल का सीधा/असुरक्षित प्रवाह	3	50-100	
1.2	लगातार उल्लंघन का दूसरा मामला	3	50-100	
1.3	लगातार उल्लंघन का तीसरा मामला	3	10-15 प्रति दिन	संपत्ति की जब्ती

1	2	3	4	5
रुपये				
2.1	ओएसएस का अवैज्ञानिक डिजायन	5	100-150	
2.2	लगातार उल्लंघन का दूसरा मामला	5	100-150	
2.3	लगातार उल्लंघन का तीसरा मामला	5	10-15 प्रति दिन	संपत्ति की जब्ती
3.1	बिना निकाय पंजीकरण के वैक्यूम टैंकर	6	50-100	
3.2	लगातार उल्लंघन का दूसरा मामला	6	50-100	
3.3	लगातार उल्लंघन का तीसरा मामला	6	150-200 प्रति दिन	वाहन की जब्ती
4.1	आकस्मिक बिखराव में भाग लेने के लिए गैर-अनुपालन	16,17	1000-1500	
4.2	लगातार उल्लंघन का दूसरा मामला	16,17	1000-1500	
4.3	लगातार उल्लंघन का तीसरा मामला	16,17	300 प्रति दिन	वाहन की जब्ती
5.1	एसटीपी से अनुपचारित FSS प्रवाहित करना	27,28,33	5000-10000	
5.2	लगातार उल्लंघन का दूसरा मामला	27,28,33	5000-10000	
5.3	लगातार उल्लंघन का तीसरा मामला	27,28,33	1000-1500 प्रति दिन	संपत्ति की जब्ती
6.1	निकायद्वारा अधिसूचित स्थल के अलावा अन्य स्थल पर अनुपचारित फीकल स्लज एवं सेप्टेज प्रवाहित करना	6,7,14,27,28,29	5000-10000	
6.2	लगातार उल्लंघन का दूसरा मामला	6,7,14,27,28,29	5000-10000	
6.3	लगातार उल्लंघन का तीसरा मामला	6,7,14,27,28,29	1500-2000 प्रति दिन	वाहन की जब्ती

परिशिष्ट-9

संदर्भित दस्तावेज (खंड 37 देखें)

फॉर्म 5 : अपेलेट बॉडी के पास अपील हेतु ज्ञापन, अपेलेट बॉडी के पास अपील हेतु ज्ञापन का फॉर्म, अपीली प्राधिकार के पास—.....(पदनाम)

1— आवेदक का पूरा नाम :

2— आवेदक का पता :
.....
.....

- 3— नगरपालिका अधिकारी का विवरण जिसके आदेश के विरुद्ध अपील की गई
नाम : पद :
- 4— उस आदेश के प्राप्त करने की तारीख जिसके विरुद्ध अपील की गई :
- 5— अपील दायर करने की तारीख :
- 6— सूचना विवरण :
क— संक्षेप में अपील की विषय-वस्तु (जिस आदेश के विरुद्ध अपील की गई है उसकी प्रति संलग्न करें)
ख— अपील का आधार (इनमें से किसी का विवरण अलग शीट में संलग्न किया जाना है)

सत्यापन

मैं, (अपीलकर्ता का नाम), पुत्र/पुत्री/पत्नी—
..... एतद्वारा घोषित करता/करती हूँ कि अपील में दिए गए विवरण मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और
विश्वास के अनुसार सत्य और सही हैं और मैंने किसी भी तथ्य को छुपाया नहीं है।

अपीलकर्ता का हस्ताक्षर

स्थान—..... तिथि—.....
अनुलग्नक के रूप में जमा किए गए प्रलेख :
1—
2—
यहाँ फाड़े—.....

पावती

संख्या—..... तिथि—..... अनुलग्नक फॉर्म के साथ प्राप्त
अपील ज्ञापन.....
स्थान—..... तिथि—.....

अधिकृत अधिकारी की मुहर और हस्ताक्षर
आदेश से (नगर पालिका परिषद लखीमपुर)

अधिशासी अधिकारी की मुहर एवं हस्ताक्षर
नगर पालिका परिषद, लखीमपुर

उपविधि के साथ परिशिष्ट 1 से 9 तक संलग्न है।

संजय कुमार,
अधिशासी अधिकारी,
नगरपालिका परिषद, लखीमपुर।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरा सही नाम अरुन्धती देवी शुक्ला पत्नी प्रेम प्रकाश शुक्ला है जो मेरे आधार कार्ड, पैन कार्ड में अंकित हैं। त्रुटिवश जे०एस०डब्ल० स्टील लिमिटेड के शेयर प्रमाण पत्र सं०-2488221 तथा 2488222 में मेरा नाम शुक्ला ए०डी० (SHUKLA A.D.) अंकित हो गया है। उपरोक्त दोनों नाम मेरा ही है। भविष्य में मेरे सुझे मेरे सही नाम अरुन्धती देवी शुक्ला पत्नी प्रेम प्रकाश शुक्ला के नाम से जाना व पहचाना जाय। एतदद्वारा यह भी प्रमाणित किया जाता है कि उपर्युक्त के सम्बन्ध में समस्त विधिक औपचारिकतायें स्वयं मेरे द्वारा पूरी की गयी हैं।

अरुन्धती देवी शुक्ला,
पत्नी प्रेम प्रकाश शुक्ला,
निवासिनी-233 / 204 / 2, तुला रामबाग,
गीता निकेतन के सामने गली प्रयागराज।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं हर्षिता चौधरी मेरी माता का सही नाम नाम सरोज चौधरी है जो कि उनके आधार कार्ड, पैन कार्ड में अंकित है लेकिन त्रुटिवश मेरे इण्टरमीडिएट के अंक प्रमाण पत्र अनुक्रमांक 23633440 में मेरी माता का नाम सरोज यादव अंकित हो गया है जो कि गलत है। जबकि मेरे हाईस्कूल के अंक पत्र तथा प्रमाण पत्र में मेरी माता का नाम सरोज चौधरी ही अंकित है। एतदद्वारा प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्त के सम्बन्ध में समस्त विधिक औपचारिकताएं स्वयं मेरे द्वारा पूर्ण की गयी हैं।

हर्षिता चौधरी,
पुत्री राजीव कुमार,
परशुराम धाम वार्ड नं०-09,
सलेमपुर, देवरिया (उ०प्र०)।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरे पुत्र का सही नाम रेयांश पाण्डेय पुत्र शिलादित्य पाण्डेय है जो उसके शैक्षिक अभिलेख, आधार कार्ड में अंकित है। मैंने अपने पुत्र का स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण अपने ज्योतिषाचार्य जी के अनुसार उसका नाम अनन्या सिंह से बदल कर कनिष्ठा सिंह रख लिया है। भविष्य में मेरी पुत्री को कनिष्ठा सिंह पुत्री देवेन्द्र सिंह के नाम से जाना एवं पहचाना जाय।

अनुसार उसका नाम रेयांश पाण्डेय से बदलकर देव आदित्य पाण्डेय रख लिया है। भविष्य में मेरे पुत्र को देव आदित्य पाण्डेय पुत्र शिलादित्य पाण्डेय के नाम से जाना व पहचाना जाये।

एतदद्वारा यह भी प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्त के सम्बन्ध में समस्त विधिक औपचारिकतायें स्वयं मेरे द्वारा पूरी की गई हैं।

शिलादित्य पाण्डेय,
पुत्र बीरेन्द्र दत्त पाण्डेय,
निवासी-शीलू विला सरोजनी नगर,
कानपुर रोड, लखनऊ।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी पुत्री का सही नाम अनन्या सिंह पुत्री देवेन्द्र सिंह है जो उसके आधार कार्ड, शैक्षिक अभिलेख में अंकित है। मैंने अपने पुत्री का स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण अपने ज्योतिषाचार्य जी के अनुसार उसका नाम अनन्या सिंह से बदल कर कनिष्ठा सिंह रख लिया है। भविष्य में मेरी पुत्री को कनिष्ठा सिंह पुत्री देवेन्द्र सिंह के नाम से जाना एवं पहचाना जाय।

एतदद्वारा यह भी प्रमाणित किया जाता है कि उपर्युक्त के सम्बन्ध में समस्त विधिक औपचारिकतायें स्वयं मेरे द्वारा पूरी की गई हैं।

देवेन्द्र सिंह,
पुत्र स्व० शत्रुघ्न सिंह,
ए -17 पत्रकार कालोनी,
अशोक नगर, प्रयागराज।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरी पुत्री का सही नाम अंशिका मिश्रा पुत्री दिनेश मिश्रा है जो उसकी शैक्षणिक अभिलेख में अंकित है। त्रुटिवश मेरी पुत्री के आधार कार्ड सं०-8806 6594 3078 में उसका नाम रश्मी हो गया है, जो कि गलत है। भविष्य में मेरी पुत्री को उसके सही नाम अंशिका मिश्रा पुत्री दिनेश मिश्रा के नाम से जाना व पहचाना जाये।

एतद द्वारा यह भी प्रमाणित किया जाता है कि उपर्युक्त के समस्त विधिक औपचारिकतायें स्वयं मेरे द्वारा पूरी की गई हैं।

दिनेश मिश्रा,
सुत स्व0 रामजनक मिश्रा,
ग्राम व पोस्ट—सोनावा, थाना—चांदा,
तहसील—लम्बुआ, जनपद—सुलतानपुर।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरा सही नाम अभियांश पुत्र रामराज सोनकर है। जो मेरे समस्त शैक्षिक/सरकारी अभिलेखों में अंकित है। त्रुटिवश मेरे एल0आई0सी0 पालिसी संख्या-238113598 में मेरा नाम देवांशु राय सोनकर अंकित हो गया है। जो मेरा घरेलू नाम है। भविष्य में मुझे अभियांश पुत्र रामराज सोनकर के नाम से जाना व पहचाना जाये।

अभियांश,
पुत्र रामराज सोनकर,
निवासी-प्लाट नं0-91 पंचवटी विनायकपुर,
कल्यानपुर, कानपुर नगर।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरा सही नाम श्याम दुलारी देवी पत्नी गिरधारी लाल है। जो मेरे समस्त सरकारी अभिलेखों में अंकित है। त्रुटिवश मेरे एल0आई0सी0 पालिसी संख्या-233206644 में मेरा नाम शिव दुलारी अंकित हो गया है। जो मेरा घरेलू नाम है। भविष्य में मुझे श्याम दुलारी देवी पत्नी गिरधारी लाल के नाम से जाना व पहचाना जाये।

श्याम दुलारी देवी,
पत्नी गिरधारी लाल,
निवासी— 11 बरयेपुर, बरलपुर,
फतेहपुर।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरा नाम अमोघ त्रिवेदी पुत्र विमलेश कुमार त्रिवेदी है। जो मेरे समस्त

शैक्षिक/सरकारी अभिलेखों में अंकित है। त्रुटिवश मेरे एल0आई0सी0 पालिसी संख्या-233239468 में मेरा नाम राहुल त्रिवेदी अंकित हो गया है। जो मेरा घरेलू नाम है। भविष्य में मुझे अमोघ त्रिवेदी पुत्र विमलेश कुमार त्रिवेदी के नाम से जाना व पहचाना जाये।

अमोघ त्रिवेदी,
पुत्र विमलेश कुमार त्रिवेदी,
निवासी-मं0नं0-173 मिनी एल0आई0जी0,
बर्गा-2, कानपुर नगर।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि फर्म मेसर्स—मीना किसान सेवा केन्द्र, ग्राम गपकापुर, तह0 विधूना, जिला औरैया की भगीदारी डीड दिनांक 09 जुलाई, 2021 के अनुसार फर्म का पंजीकरण सं0 AUR/0009550 पर दिनांक 16 जुलाई, 2021 को पंजीकृत है। फर्म में श्री रामकृष्ण सागर व श्री विनीत कुमार भागीदार थे। भागीदारी डीड दिनांक 03 मई, 2024 के अनुसार साझीदारी में श्री कप्तान सिंह पुत्र श्री अजय कुमार निवासी ग्राम पो0 बैसोली, जिला औरैया को शामिल किया गया है तथा साझीदार श्री रामकृष्ण सागर स्वेच्छा से साझीदारी से पृथक हो गये हैं। वर्तमान में श्री विनीत कुमार व श्री कप्तान सिंह साझीदार हैं।

विनीत कुमार,
पार्टनर।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेसर्स आदित्य इंजीनियर्स एंड बिल्डर्स पता—49, आलू थोक, हरदोई विधान में परिवर्तन की सूचना देता हूँ। फर्म का विघटन आपसी सहमति से 13 अगस्त, 2024 से विघटन किया जा रहा है अब इस फर्म से कोई भी साझेदार कार्य करता है तो यह उसकी स्वयं की जिम्मेदारी होगी।

एतद द्वारा यह भी प्रमाणित किया जाता है कि जो गलत है। भविष्य में मेरे पुत्र को उसके सही नाम उक्त के सम्बन्ध में समस्त विधिक औपचारिकतायें स्वयं अंकुश सिंह पुत्र लल्लन के नाम से जाना व पहचाना मेरे द्वारा पूर्ण की गई है।

आदित्य कुमार सिंह,
साझेदार,
मेसर्स अदित्य इंजीनियर्स,
एंड बिल्डर्स पता-49, आलू थोक,
हरदोई।

लल्लन,
पुत्र स्व0 बोडी लाल,
ग्राम-खटांगी, पोस्ट-आंजा
प्रयागराज।

NOTICE

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पुत्र का सही नाम समीर राना (SAMEER RANA) है जो कि उसके आधार कार्ड व सभी शैक्षिक अभिलेखों में अंकित है। त्रुटिवश मेरी सेन्य सेवा के अभिलेख में मेरे पुत्र उपरोक्त का नाम समीर (SAMIR) अंकित हो गया है। एतदद्वारा प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्त के सम्बन्ध में समस्त विधिक औपचारिकतायें स्वयं मेरे द्वारा पूर्ण की गयी हैं।

मंजूर खान,
565, मजहर मियां के पास मसवानी,
फतेहपुर, उ0प्र0।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरे पुत्र का सही नाम अंकुश सिंह पुत्र लल्लन है। जो उसके शैक्षिक अभिलेख में अंकित है। त्रुटिवश मेरे पुत्र के आधार कार्ड सं0 691551301099 में उसका नाम बीरेन्स कुमार अंकित है,

It is generally informed that my correct name is SAILJA YADAV wife of late Subhash Chandra, which is mentioned in my educational records and Aadhaar Card. In my son's (SWAPNIL YADAV) high school 2022 mark certificate (Roll number-23250989) and intermediate 2024 mark certificate (Roll number-23698591) my name has been mentioned as SAILJA DEVI which is wrong.

Sailja Yadav,
Vill-Pannoi, Post-Mahgaon,
Dist.- Kaushambi.

NOTICE

I, ASHOK NARAIN S/O SHRI RAM SANEHI TIWARI, Residing at Quarter No-350 A, Rail Gaon Colony, Subedarganj, Prayagraj, U.P.-211015 have change my name to ASHOK NARAIN TIWARI vide affidavit date 01st June 2024 at Prayagraj

ASHOK NARAIN.